ज्ञानामृत

मार्च, 1984 वर्ष 19 ❋ अंक 9८ मूल्य 1.35

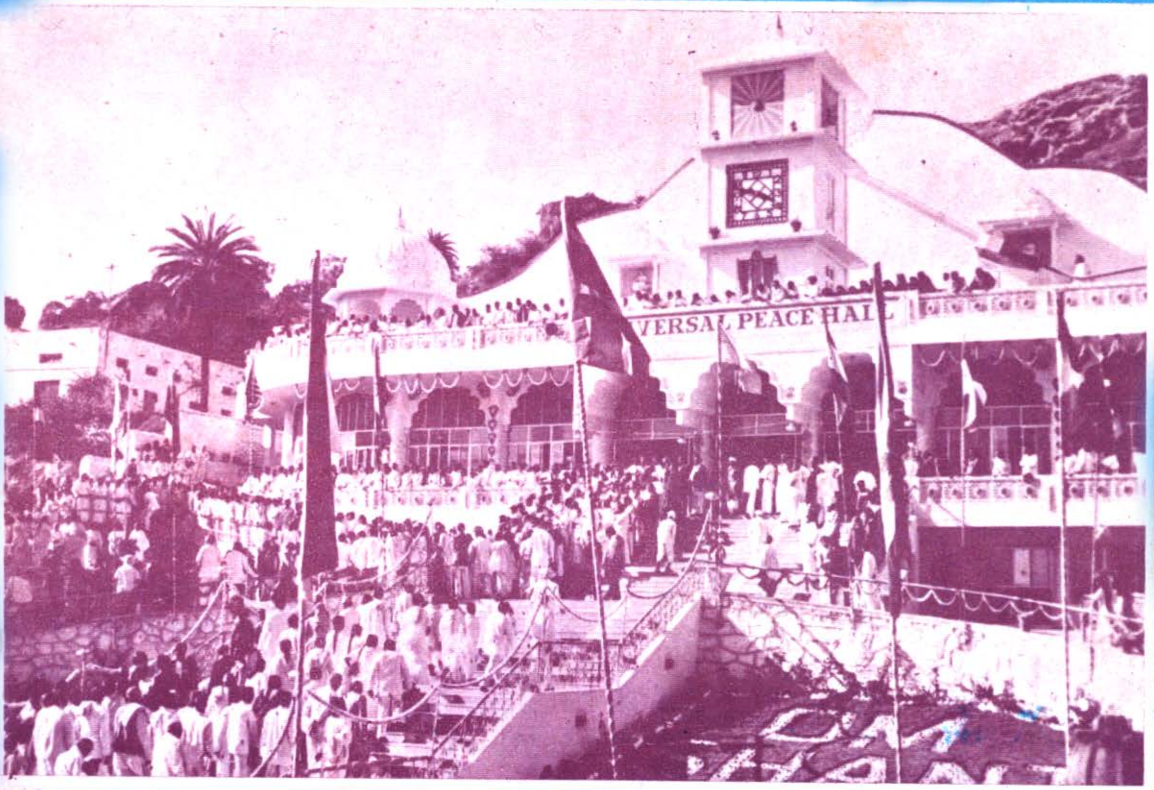

↑'विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन दृश्य । आबू स्थित ओम शान्ति भवन' के समक्ष ध्वजारोहण समारोह

नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में विश्व-शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर (दाएं से) श्रीमति सादात (मिस्र). ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी, डॉ० जेम्ज ओ० सी० जोन्ह, संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव उपस्थित हैं।

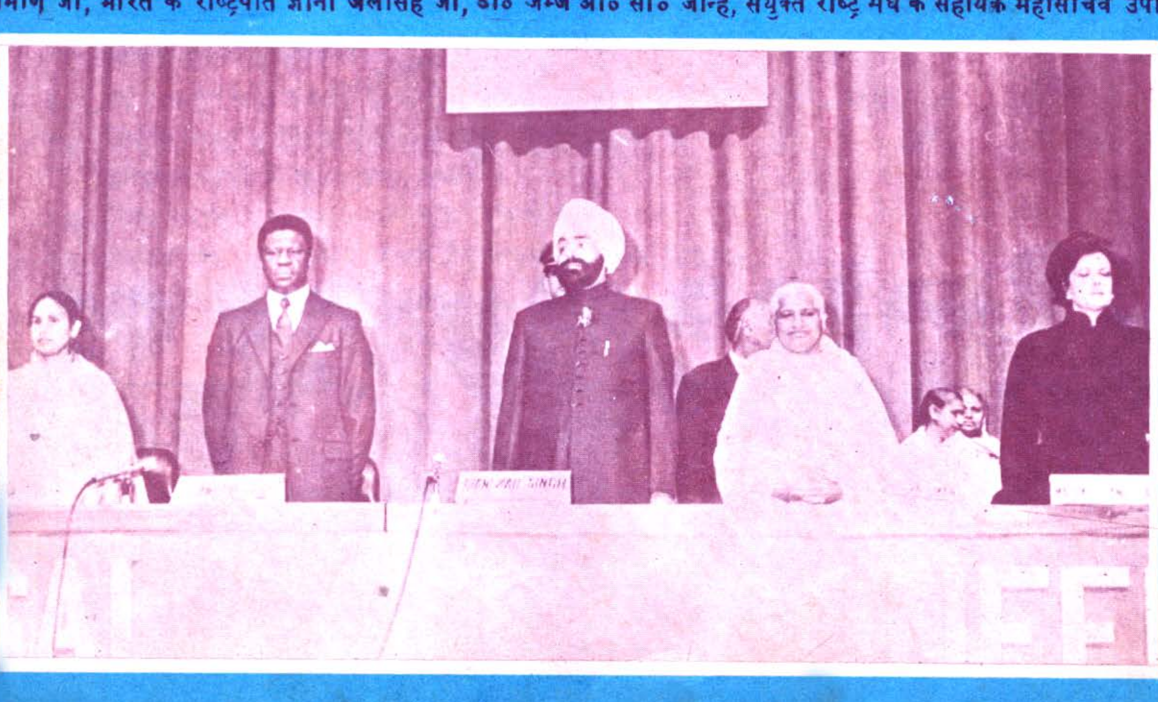

विश्व शांति महासम्मेलन-८४

(सचित्र)

नई दिल्ली स्थित विज्ञान-भवन में विश्व-शान्ति-महासम्मेलन का उद्घाटन आदरणीय जैलसिंह, भारत के राष्ट्रपति, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी दीप प्रज्ज्वलित करके कर रहे हैं।

आदरणीय भ्राता दलाई लामा जी का ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहिनों ने स्वागत किया। चित्र में वे पाण्डव भवन, माउंट आबू में शांति स्तम्भ के समक्ष खड़े हैं।

राजयोग शिविर के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित कर रहे हैं ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी, जालन्धर से स्वामी निरंजनन्द गिरि जी तथा अन्य धार्मिक नेता ।

विश्व शान्ति महासम्मेलन के अवसर पर आबू पर्वत पर निकाली गई अन्तर्राष्ट्रीय शोभा यात्रा का एक दृश्य ।

विश्व-शान्ति महासम्मेलन में भाग लेने आए 47 देशों के प्रतिनिधि 'ओम शान्ति भवन' के समक्ष दिखाई दे रहे हैं ।

विज्ञान भवन (नई दिल्ली) में विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सम्बोधन करते हुए डॉ० जेम्ज ओ० सी० जोन्ह, सहायक महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ ।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	विश्व शान्ति महासम्मेलन—१९८४ —एक सफल आयोजन—(सम्पादकीय)	२
२.	सचित्र समाचार—विश्व शान्ति सम्मेलन	५
३.	केवल राजयोग ही पवित्रता, शान्ति, प्रेम तथा सुख की प्राप्ति का साधन	६
४.	राजयोग द्वारा मानव मन को बदल उसमें विवेक जागृत किया जा सकता है	१०
५.	मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना	११
६.	आध्यात्मिक शक्ति ही विश्व में शान्ति लायेगी	१२
७.	कलम एवं संचार की शक्ति से भाई चारा एवं जन-जन में शान्ति स्थापित हो सकती है	१३
८.	महिलाओं की समस्याओं का समाधान पुरुषों के खिलाफ चलाये आन्दोलन से नहीं वरन् आपसी सहयोग से ही मिलेगा	१४
९.	युद्ध से बचने का उपाय—आध्यात्मिक शक्ति का विकास	१५
१०.	समाचार पत्र राजनैतिक समाचारों के बजाय सामाजिक समाचारों को प्रमुखता दें, तो मानव का कल्याण होगा।	१६
११.	विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर शोभा यात्रा	१७
१२.	विश्व परिवर्तन का कार्य युवा वर्ग द्वारा ही किया जायगा	१८
१३.	आध्यात्मिकता के अनुभव से विज्ञान बौद्धिक योग्यता बन जायेगा	१९
१४.	ईश्वरीय नियमों का अनुसरण करने से सुख शान्ति की प्राप्ति हो सकती है	२०
१५.	विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश की पवित्र कन्याओं का समर्पण समारोह सम्पन्न	२१
१६.	वह दिन दूर नहीं जब कि सारा विश्व ब्रह्माकुमारियों से शान्ति का पाठ पढ़ेगा	२२
१७.	द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन के लिए विश्व भर से अनेक हस्तियों के शुभकामना सन्देश	२४
१८.	विश्व शान्ति सम्मेलन—समाचार (चित्रों में)	२५
१९.	धार्मिक एवं भावनात्मक एकता हेतु ध्यान देने योग्य सिद्धान्त	२९
२०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३१

सूचना

जिन्होंने ज्ञानामृत व वर्ल्ड रिन्युवल का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है, वे कृपया शीघ्र भेजें।

व्यवस्थापक

बी ९/१९, कृष्णा नगर,

दिल्ली-५१

विश्व शान्ति महासम्मेलन-१६८४

एक सफल आयोजन—

गत मास माउन्ट आबू में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय तथा 'राजयोग शिक्षा एवं शोध फ़ाउन्डेशन' ने संगठित रूप से जो विश्व-शान्ति महासम्मेलन का कार्य-निर्वाह किया वह सफल सिद्ध हुआ। इसका मांगलिक सत्र धार्मिक क्षेत्र के एक मूर्धन्य नेता तिब्बत के प्रसिद्ध दलाइ-लामा ने किया। वे जब मधुवन में थे तो उन्हें शिव बाबा का यथा-सम्भव परिचय दिया गया और यह कार्य शिव बाबा का है, उन्हें यह बताया गया। बौद्ध मत परमात्मा को एक अनादि और अविनाशी परमपुरुष के रूप में नहीं मानता। परन्तु दलाईलामा जी को यह बताया गया कि जिन नैतिक मूल्यों को वे मानते हैं और जिन पर ही वे अपने भाषणों में बल देते हैं, एक अनादि अविनाशी परमात्मा को, जो कि उन नैतिक मूल्यों का स्रोत या उद्‌गम, मूर्तरूप और स्थापक है, माने बिना नैतिक मूल्यों को टिकाओ ही नहीं मिल सकता। खैर, कहने का भाव यह है कि प्रारम्भ में इस अति विशिष्ट एवं अग्रगण्य धार्मिक नेता को ईश्व-रीय सन्देश मिला और इन्हें मधुबन का वातावरण तथा यहाँ का कार्य बहुत ही पसन्द आया। इस अवसर पर हरिद्वार के पावन धाम के जो स्वामी वेदान्तानन्द जी आये हुए थे, उन्होंने तो यह कहा कि एक दिन आयेगा जब लोग कहेंगे—"बाबा शरणं गच्छामि।" इसी प्रकार, पारसी मत के प्रसिद्ध धर्म-नेता भ्राता नवरोज़ होमजी जी ने भी इस संस्था के कार्य की महिमा की।

फिर महासम्मेलन के परिसंवाद सत्रों का उद्‌-घाटन भारत की राजधानी—नई देहली—में जो कि आजकल कई कारणों से विश्व के लोगों के लिये ध्यान-केन्द्र बना हुआ है, के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विज्ञान भवन में, इस प्राचीन देश के राष्ट्र-पति द्वारा किया गया। और, इस कार्यक्रम का समाचार दैनिक पत्रों में भी छपा और रेडियो टेलीविजन पर भी प्रसारित किया गया। इस प्रकार पहला आयाम भी सफल सिद्ध हुआ। विशेष बात यह कि राष्ट्रपति महोदय ने मई मास में मधुबन आने की घोषणा कराई। हाल भी विशिष्ट लोगों से भरा था और कार्यक्रम भी सुचारू रूप से चला।

अगले ही दिन मधुबन में समाचार पत्रों के संवाददाताओं का सम्मेलन भी था और मधुबन में महासम्मेलन के पहले खुले अधिवेषण का प्रारम्भ भी होना था। इस खुले अधिवेषण में राजस्थान—जिस प्रदेश में यह आयोजन होने वाला था—के राज्यपाल, महोदय भ्राता ओ० पी० मेहरा जी पधारे, भारत के सबसे पहले सर्वप्रमुख सेनाध्यक्ष भ्राता केरियप्पा जी भी थे और भारत के उत्तर खण्ड के भूतपूर्व शंकराचार्य सत्यमित्रानन्द जी, जिन्होंने कि वर्तमान में हरिद्वार में प्रसिद्ध माता मन्दिर बनाया हुआ है, भी थे। उनके अतिरिक्त, जालन्धर के संन्यास आश्रम के महामण्डलेवर स्वामी निरंजनानन्द गिरि तथा अहमदाबाद के भारतीय संस्कृति महोत्सव समिति के प्रधान स्वामी मनुवीर्य जी भी सम्मिलित हुए थे, इस प्रकार इस प्रारम्भिक सत्र का उद्‌घाटन भी धूम-धाम से हुआ और इसमें भी विशिष्ठ लोगों को ईश्वरीय सन्देश मिला तथा वे खचाखच भरे हाल में जन-समूह के उत्साह और मधुबन के पवित्रकारी वातावरण तथा शान्तिप्रवाह से बहुत प्रभावित हुए। इन नेताओं का भावभीना स्वागत हुआ और स्नेहसिग्ध रीति से ही इनकी विदाई भी हुई। निश्चय ही वे मधुबन की स्नेह की छाप लेकर गये और उन्होंने देखा कि यह संस्था अलौकिक है।

पत्रकारों के सम्मेलन में भी १५० से अधिक संवाददाता तथा कुछ समाचार पत्रों के मालिक या मुख्य सम्पादक सम्मिलित थे। उदाहरण के तौर पर भास्कर ग्रुप आफ़ पेपर्स के मालिक, भ्राता विशम्बर दयाल तथा नई देहली से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र नवभारत के सम्पादक, भ्राता वेद प्रकाश वैदिक जी, बम्बई की मासिक पत्रिका 'मिर्रर' की सम्पादिका बहन प्रभा गोबिन्द तथा 'फ़ेमिना' की सम्पादिका बहन बिमला पटेल भी पधारी थीं। इतनी संख्या में पत्रों-पत्रिकाओं का इस महासम्मेलन में रुचि लेना कोई कम महत्त्व-पूर्ण या कम सफलता का प्रतीक नहीं है। इन पत्र-कारों में कुछ विदेशी पत्रकार भी थे। उदाहरण के तौर पर एक महिला संवाददाता स्वीडन देश से आई थीं। और स्वीडन की टी० वी० प्रोडयूसर बहन बिरगित्ता भी पधारी थीं, आलइण्डिया रेडियो के प्रतिनिधि भी सम्मिलित थे। भारत की दो ही जो मुख्य समाचार एजेन्सियों—पी० टी० आई और यू० एन० आई हैं, उन्होंने तो इस कार्यक्रम के परिसंवादों तथा निष्कर्षों के प्रसारार्थ अपने-अपने टेलीप्रिन्टर ही लगा लिये थे और वरिष्ठ अधिकारी नियुक्त किये थे। अत: इतनी बड़ी संख्या में समाचार पत्रों के प्रतिनिधि सम्पर्क में आये, उन्होंने अपनी आँखों से सब-कुछ देखा, अपने कानों से सत्रों में वार्त्ताएँ सुनीं, भाषण सुने और खूब प्रश्न भी पूछे तथा व्यक्तिगत रूप से भेंट भी की। यह भी सम्मेलन की सफलता का सूचक है। भारत की अनेक भाषाओं में मुख्य पत्रों में सम्मेलन का समा-चार प्रतिदिन प्रकाशित होता रहा और रेडियो में भी कई बार आया।

इससे पहले नई देहली में भी जो पत्रकार सम्मेलन हुआ था, उसमें भी लगभग बीस देशीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रों-पत्रिकाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित थे और इसका सार भी अगले दिनों समाचार पत्रों में छपा था। इस पत्रकार सम्मेलन को संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहायक महासचिव भ्राता जेम्स ओ जोनाह ने तथा मिश्र देश के दिवंगत राष्ट्रपति भ्राता सादात की धर्मपत्नी बहन जेहान-अल-सादात ने तथा इंग्लैंड से आये विश्व-विख्यात वैस्टमिन्स्टर एबी (मुख्यत्तम चर्च) के डीन (उच्च अधिकारी) भ्राता विलियम कार्पेन्टर तथा उनकी धर्मपत्नी, बहन लिलियन कार्पेन्टर ने, तथा भ्राता-स्टीव नारायण ने भी सम्बोधित किया था।

हम ऊपर संयुक्त राष्ट्रसंघ के जिन सहायक महासचिव तथा श्रीमती सादात और कार्पेन्टर-युगल की चर्चा कर आये हैं, उन्होंने मधुबन में भी पत्रकारों को सम्बोधित किया तथा खुले अधिवेषणों और कार्यशालाओं में भी भाग लिया। विशेष बात यह कि वे सभी 'बाप-दादा' से भी मिले। इसके बाद उन्होंने जो अनुभव सुनाये, उनसे ही इस सम्मे-लन की सफलता का बोध होता है। इन्होंने मधुबन में अन्तिम सत्र में, अगले दिन ओम शान्ति भवन तथा मधुबन से भाव-भीनी विदा लेने के बाद, अहमदाबाद या नई देहली में पुन: हुए पत्रकार सम्मेलन में, आगरा के पत्रकार सम्मेलन में या गयाना देश के हाई कमिश्नर, भ्राता स्टीव नारायण जी, के यहाँ दिये गये स्वागत में, जहाँ पर कि कई देशों के राजदूत, उनके पारिवारिक सदस्य तथा भूतपूर्व जनरल मलहोत्रा और पी० टी० आई के वर्तमान जनरल मैनेजर भ्राता रामाचन्द्रन और अन्य विशिष्ट व्यक्ति पधारे थे, के सम्मुख बहुत ही अच्छे शब्दों में अपने अनुभव तथा अपनी संस्मृतियों को उद्घोषित किया। उदाहरण के तौर पर श्रीमती सादात ने कहा कि मधुबन सचमुच में स्वर्ग है और इस संस्था में जाकर आध्यात्म में मेरी रुचि हुई है और मेरा यह निश्चय है कि शान्ति का रास्ता यही है जो यहाँ बताया जाता है और अब मैं निश्चय ही लोगों को इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कार्य से अवगत कराऊँगी तथा आशा है कि अब मैं शाकाहार भी बनूँगी और योगाभ्यास तो करुँगी ही।" इसी प्रकार भ्राता जोनाह ने कहा कि—"मैं एकत्रित हुए विदेशी दूत महोदयों तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों से निवेदन करुँगा कि वे अपने अति व्यस्त जीवन में राजयोग के अभ्यास के लिये कुछ समय अवश्य निकाला करें...।" इसी प्रकार भ्राता कार्पेन्टर तथा उनकी युगल मधुबन से विदा लेते समय भाव-विभोर थे और दादी जी से मिलते समय उन्होंने अपनी अपार खुशी

और सेवा के लिये उत्साह का वर्णन किया।

केवल इनकी बात नहीं, भारत सरकार के श्रम और पुनर्वास मन्त्री, भ्राता वीरेन्द्र पाटिल जी, शिक्षा, संस्कृति और समाज कल्याण के उपमंत्री भ्राता पी० के ठुंगन, रासायनिक पदार्थों तथा खाद्य के राज्यमंत्री भ्राता रामचन्द्र रथ, केनीया के भवन निर्माण विभाग के सहायक मंत्री, भ्राता लबान केतेले, महाराष्ट्र के भूतपूर्व शिक्षामंत्री, भ्राता मधुकर चौधरी, सिंगापुर में भारत के भूतपूर्व दूत, भ्राता सिद्धार्थाचार्य, प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता रामकृष्ण बजाज, इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बर के प्रधान, भ्राता शान्तिलाल सोमय्या, सिंगापुर के प्रसिद्ध व्यापारी, भ्राता कान्तिलाल शाह, नेशनल सिविल डिफेन्स कालेज के निर्देशक भ्राता के० के० मल्होत्रा, कर्नाटक विश्व-विद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति, भ्राता आर० सी० हीरेमथ, पंजाब विश्व-विद्यालय, चण्डीगढ़ में मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष, भ्राता बी० मोहन, जर्मनी के शिक्षाविद, डा० ब्लैकमेन, बम्बई में प्रसिद्ध लोकमान्य तिलक म्युनिसिपल मेडीकल कालेज के प्रमुख प्रोफेसर डाक्टर एन० ए० डमोलकर, बम्बई में इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ़ टेक्नोलोजी के निर्देशक, डा० ए० के० दे०, कानपुर में इन्डियन इंस्टीट्यूट आफ़ टेक्नोलोजी के डा० एस० सम्पत, बम्बई के इन्स्टीट्यूट आफ़ साइंस के निर्देशक डा० के० एम० जोशी तथा कटक में इन्स्टीट्यूट आफ़ एस्ट्रोलोजी के प्रोफे० बेनर्जी, जर्मनी के होलिस्टि सामंस इन्स्टीट्यूट के डा० वाल्टर ए० फ्रंक, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, भ्राता गुमानमल लोढ़ा, गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, भ्राता कुरेशी जी तथा अन्यान्य अनेक गणमान्य एवं विशिष्ट व्यक्ति पधारे थे। स्थानाभाव के कारण सभी के नामों का उल्लेख करना सम्भव नहीं, परन्तु इनके अतिरिक्त भी और जो विशिष्ट व्यक्ति आये वे भी अपने-अपने योग्यता-क्षेत्र में ख्याति-प्राप्त हैं। इन सभी को मधुबन तपोभूमि के वातावरण का आध्यात्मिक परिचय एवं लाभ मिला तथा इन्होंने अपने भाषण किये।

इसके अतिरिक्त जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रति सत्र में या प्रतिदिन हुए, वे भी सभी उच्चकोटि के थे। उन सभी के द्वारा न केवल सभी का मन आनन्दित एवं मुदित हुआ बल्कि उन सभी में भी जीवन को दिव्य बनाने की प्रबल प्रेरणा थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी बिन्दु पर, राजयोग के किसी पहलू पर अथवा शान्ति-प्राप्ति की विधि पर प्रकाश डालते थे।

विशेष बात यह कि मधुबन में आवास-निवास की व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, ओमशान्ति भवन तथा आसपास की साज-सज्जा का कार्य, सफ़ाई एवं शुचिता, सभा मंच की व्यवस्था, पत्रकारों तथा आये अथितियों की सेवा-संभाल-स्वागत आदि की व्यवस्था, कार्यालय में लिखा-पढ़ी की व्यवस्था, साहित्य एवं सम्मेलन-सम्बन्धी सूचना-पत्रों की छपाई आदि का कार्यान्वित कार्यक्रम एवं योजना-निर्माण की कार्य-कुशलता, स्वागत-समिति स्वास्थ्य-सेवा-व्यवस्था किस-किस कार्य की चर्चा करें— सभी के व्यक्तिगत एवं सामूहिक सहयोग एवं योगदान से यह महासम्मेलन शिव बाबा का सन्देश देने में सफल सिद्ध हुआ।

—जगदीश

भ्राता एच० एम० पटेल, पूर्व केन्द्रीय वित्त मंत्री, देश विदेश से पधारे प्रतिनिधियों के स्वागत समारोह में सम्बोधित करते हुए। ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि, दादी जानकी तथा अन्य मंच पर विराजमान हैं।

विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सम्बोधित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल भ्राता ओ० पी० मेहरा जी।

10 फरवरी को विश्व-शान्ति महासम्मेलन के प्रथम सत्र को सम्बोधित करती हुई ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी । उनके बाएं राजस्थान के राज्यपाल भ्राता ओ० पी० मेहरा जी, जनरल के० एम० करिअप्पा जी तथा दायीं ओर श्रीमति सत्या मेहरा जी, दादी जानकी जी तथा महामहिम सत्य मित्रानन्द गिरि विराजमान हैं।

आबू स्थित 'ओम शान्ति भवन में, विश्व-शान्ति-महासम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर देश विदेश से पधारे महानुभावों का स्वागत दृश्य

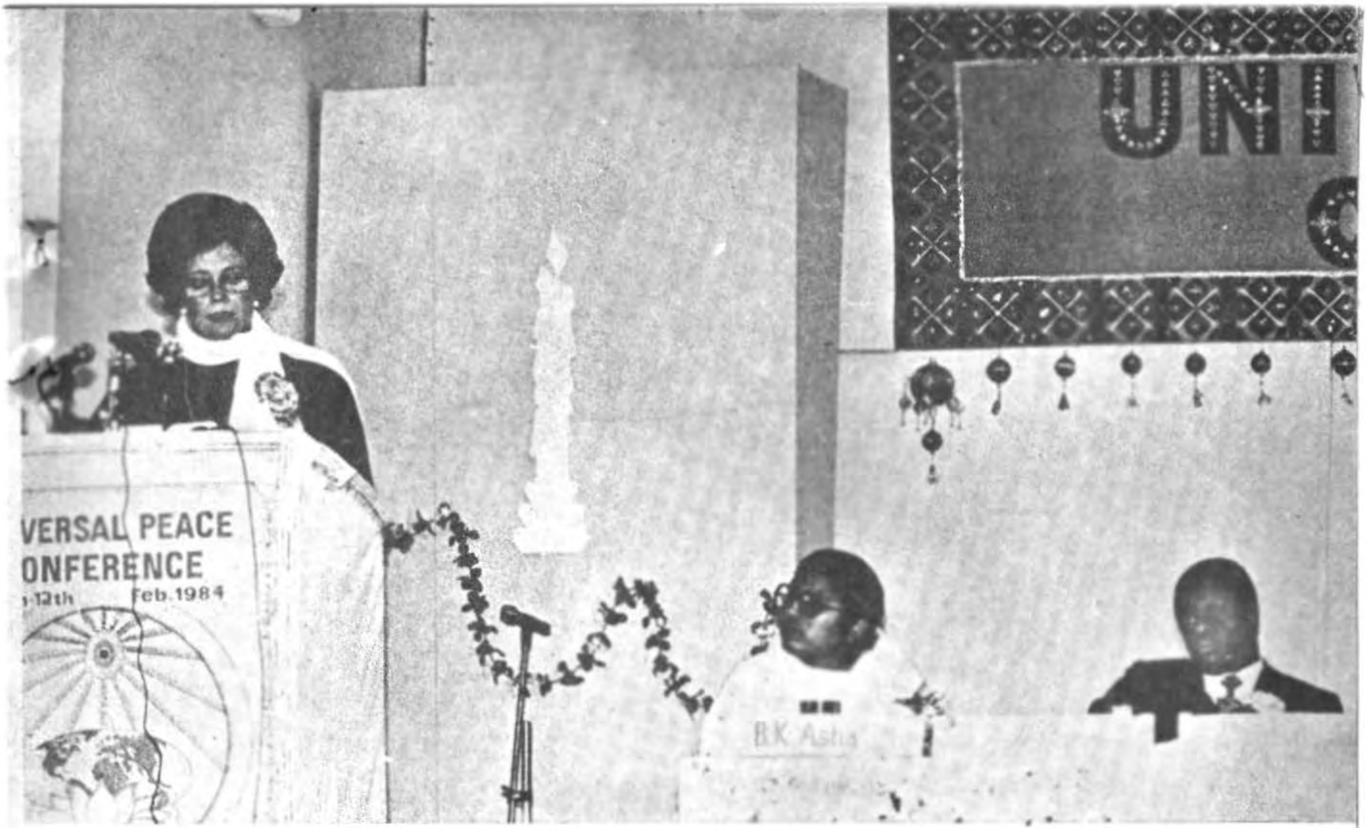

आबू स्थित 'युनिवर्सल पीस हाल' में खुले अधिवेशन में अपने विचार प्रकट करती हुई श्रीमती सादात जी ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव 'युनिवर्सल पीस हाल' में खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए।

भ्राता रामचन्द्र रथ, केन्द्रीय रसायन मन्त्री, विश्व-शांति महासम्मेलन के अन्तर्गत हुई युवा गोष्ठी में अपने विचार रखते हुए।

विश्व-शांति महासम्मेलन के अंतर्गत हुई महिला गोष्ठी में भाग ले रही हैं श्रीमती सादात, 'फेमिना' की सम्पादक बहिन विमला पाटिल तथा अन्य।

दलाईलामा द्वारा सद्भावना समारोह का माउण्ट आबू में उद्घाटन

केवल राजयोग ही पवित्रता, शान्ति, प्रेम तथा सुख की प्राप्ति का साधन

ब्र० कु० प्रकाशमणि

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय पर विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदाय में सद्भावना एवं भावनात्मक एकता को दृढ़ करने की दिशा में सद्भावना समारोह ६ फरवरी १९८४ को आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन पूज्य मूर्ति दलाई लामा जी द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में आपने कहा कि विश्व काफी बदल चुका है, जिसके कारण आज के मानव के अन्दर बहुत भय उत्पन्न हो गया है और हम यह स्पष्ट रूप से देख रहे हैं कि शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति के लिये भौतिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि आन्तरिक शान्ति एवं आध्यात्मिक अनुशासन की अत्यधिक आवश्यकता है। मेरे विचार से विश्व के नवनिर्माण के लिये मानवीय मूल्यों का भौतिक प्रगति के साथ सम्मिश्रण होना अनिवार्य है। प्रत्येक धर्म ने हमेशा नैतिक मूल्यों द्वारा उस लक्ष्य के लिये प्रेरित किया है। यदि हम सभी धर्मों के अनुयायी इसे क्रियात्मक रूप से अपना लें, तो यह विश्व शान्ति की दिशा में बहुत बड़ा कदम होगा।

इस अवसर पर संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि राजयोग ही पवित्रता, शान्ति, प्रेम तथा सुख की प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ एवं एकमात्र साधन है और इसके द्वारा ही शान्तिमय विश्व का निर्माण होगा। उन्होंने आगे कहा कि अरावली में स्थित आबू पर्वत से सर्व विश्व की आत्माओं को यह पवित्र प्रेरणा परमात्मा शिव से मिल रही है।

पावन धाम हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी वेदान्तानन्द जी ने कहा कि मनुष्य जीवन के लिये दृढ़ विश्वास, अच्छा आचरण एवं पवित्र विचार अति आवश्यक है। सारी दुनिया हिंसा के दौर में बह रही है एवं इस संस्था द्वारा सत्य, अहिंसा, श्रेष्ठ आचरण एवं विज्ञान मूलक विचारों द्वारा विश्व परिवर्तन का जो कार्य चल रहा है, वह अत्यन्त सराहनीय है। अन्त में उन्होंने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि समय दूर नहीं, जब सभी एक स्वर में यही कहेंगे कि शिव परमात्मा ही सबके कल्याणकारी और सद्गतिकर्त्ता हैं।

पारसी धर्म के प्रीस्ट नवरोज दस्तूर होमजी ने कहा कि धर्म का लक्ष्य आपसी व्यवहार और सम्बन्ध में सेतू बनाना है, न कि दीवारें खड़ी करना। विभिन्न धर्मों में समन्वय और भावनात्मक एकता लाने के लिये इस अवसर पर एक १०-सूत्रीय चार्टर भी पारित किया गया।

राजयोग द्वारा मानव मन को बदल उसमें विवेक जागृत किया जा सकता है

भ्राता एच० एम० पटेल, पूर्व केन्द्रीय वित्त मन्त्री

द्वितीय विश्व शान्ति महासम्मेलन के प्रथम सत्र का यहाँ ओमशान्ति भवन के सभागार में विश्व भर से पधारे लगभग ३००० प्रतिनिधियों का चन्दन के खुशबूदार फूलों एवं योगिक मुस्कान के साथ प्रारंभ हुआ। बम्बई से सुविख्यात संगीतज्ञ भ्राता असित देसाई ने परमपिता शिव के स्वागत का भावपूर्ण गीत गाकर सभागार में बैठे हजारों दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया।

राजयोग प्रशिक्षण शिविर की संचालिका दादी मनोहर इन्द्राजी ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का इतिहास एवं इसके संस्थापक पिता-श्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के जीवन वृत्तान्तों पर अपने स्वयं देखें एवं अनुभूति किये अनुभवों के आधार पर बताया कि पिता-श्री ब्रह्मा बाबा को १९३६ में परमपिता परमात्मा शिव का साक्षात्कार हुआ था। शिव बाबा ने उन्हें वर्तमान पतित कलियुगी दुनिया के भयंकर विनाश का एवं आने वाली श्री कृष्ण की सतयुगी दुनिया के स्थापना का भी साक्षात्कार कराया था। इन दिव्य साक्षात्कारों से बाबा को भारी वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने अपना सर्वस्व परमात्मा को समर्पित करके पवित्र एवं योगी बनने-बनाने एवं नई दुनिया की स्थापना करने के महान कार्य में समर्पित भाव से लग गये।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सह उप-मुख्य-प्रशासिका ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी ने सम्मेलन में पधारे समस्त प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करते हुए आशा व्यक्त की कि विश्व भर से पधारी आत्माएं अवश्य ही विश्व शान्ति हेतु महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त करेंगी। परमपिता शिव के नई दुनिया की स्थापना में सहयोगी बनेंगी।

भारत सरकार के भूतपूर्व वित्त मंत्री भ्राता एच० एम० पटेल ने अपने भाषण में बताया कि शान्ति की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति की कुदरती इच्छा है, क्योंकि उसके पास विवेक नहीं है। विवेक को जाग्रत करने की आवश्यकता है, नहीं तो आज का यह विवेक शून्य मानव निश्चय ही अपने ही द्वारा बनाये हुए इन भयंकर अणु आयुधों से विश्व का विनाश कर डालेगा। अतः मानव मन को बदल कर उसमें विवेक जागृत करना है। यह संस्था राजयोग के द्वारा इस कार्य को कर रही है, यह स्तुत्य है, सराहनीय है।

नवभारत टाइम्स के सह सम्पादक भ्राता वेद-प्रकाश वैदिक जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि मुझे इस सम्मेलन में आने की प्रेरणा इसलिये हुई कि यहाँ पर विश्व शान्ति की ज्वलन्त समस्या पर विचार विमर्श होगा, क्योंकि आज का विश्व भयंकर तनाव की स्थिति से गुजर रहा है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सात्विक भोजन, धूम्रपान निषेध एवं पवित्रता पर विशेष जोर दिया जाता है।

अतः यह आशा की जा सकती है कि विश्व शान्ति का इनका प्रयास सफल होगा, क्योंकि भोजन का मन पर प्रभाव पड़ता है। तमोगुणी अन्न से तमोगुणी मन बनता है और यही तमोगुणी मन वाले लोग विश्व में अशान्ति फैलाते हैं। उन्होंने बताया कि इस संस्था में माताओं-बहनों को प्रमुख प्रतिष्ठा प्राप्त हैं, जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवत्व स्वतः आ जाता है। शिव की शक्ति ये माताएं-बहनें हैं। अतः मुझे यह पूर्ण निश्चय है कि शिव से राजयोग की शक्ति प्राप्त ये बहनें अवश्य ही विश्व शान्ति के महत्वपूर्ण कार्य में सफल होंगी।

मध्यप्रदेश सरकार के सचिव भ्राता मोतीसिंह

(शेष पृष्ठ १७ पर)

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

विश्व शान्ति सम्मेलन में धर्म नेताओं की गोष्ठी

विश्व शान्ति सम्मेलन के दूसरे दिन आज ओम-शान्ति भवन के विशाल सभागार में भारत के विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के धार्मिक नेताओं ने एक ही मंच पर उपस्थित होकर विश्व शान्ति के लिये अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किये। सभी इस बात पर सहमत थे कि धर्म जीवन में उच्च कोटि की धारणाऐं सिखाता है। धर्म एकता एवं सहिष्णुता सिखाता है, जो धर्म एकता को तोड़ता है, आपस में मतभेद पैदा करके लोगों को भड़काकर, झगड़ा पैदा कराके समाज में अशान्ति पैदा करता है, वह धर्म नहीं, अधर्म है। क्योंकि मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना। इस अवसर पर बोलते हुए हरिद्वार के प्रमुख सन्त एवं भारतमाता मन्दिर के ट्रस्ट के अध्यक्ष स्वामी सत्यमित्रानन्द जी ने भाव विभोर होकर मौन के बावजूद भी अपने लिखित वक्तव्य में बताया **कि ब्रह्माकुमारी बहनें पवित्रता एवं शान्ति का सन्देश विश्व के कोने-कोने में फैला रही हैं। यह देखकर मैं उन्हें लाख-लाख धन्यवाद देता हूं। उन्होंने कहा कि जो लोग माउण्ट आबू घूमने आते हैं और पाण्डव भवन में नहीं आते, उनका जन्म लेना बेकार है, क्योंकि पाण्डव भवन एक सर्वोच्च तीर्थ बन चुका है, जहां से शान्ति, प्रेम एवं सौहार्द की ज्ञान धारा प्रवाहित हो रही है।**

सर्व मंगल आश्रम पाटन, गुजरात के सन्त स्वामी भानुविजय महाराज ने अपने प्रवचन में बताया कि शान्ति बाहर नहीं अन्दर है। अंत: मनो परिवर्तन करके मनुष्यात्माओं को आत्म-ज्ञान कराना होगा, उसके लिये यह संस्था स्तुत्य प्रयास कर रही है।

निरंजन आश्रम जालन्धर के महामण्डलेश्वर स्वामी निरंजनदास जी ने बताया कि अज्ञान की नींद में मनुष्यात्माऐं सोई हुई हैं। उन्हें झकझोर कर, जगाकर उनके कान में ज्ञान धारा डाली जाये, तो विश्व शान्ति होगी। राजयोग का अभ्यास इसमें सहयोगी होगा।

स्वामी नारायणदास जी ने अपने प्रवचन में विश्व शान्ति हेतु बताया कि व्यक्ति के अन्त:करण को जागृत करके ही विश्व में शान्ति आयेगी। व्यक्ति से ही समिष्ठि का कल्याण होगा। समाज में एक-एक व्यक्ति का महत्व है।

दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर एवं विश्व हिन्दू परिषद् के प्रवक्ता प्रो० ब्रह्मस्वरूप जी ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शान्ति प्रयासों में सभी के सहयोग की अपील करते हुए सराहना की।

अखिल भारतीय नेचरोपैथ सेन्टर के स्वामी मनुवीर्य जी ने बताया कि सर्व धर्म समभाव से धर्म क्षेत्र में शान्ति आयेगी, तो कर्म क्षेत्र में शान्ति आ ही जायेगी।

इस गोष्ठी में सभी धर्माचार्यों ने एकमत से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रस्तुत धर्माचार्यों एवं समाज नेताओं हेतु प्रस्तावित आचार-संहिता में दस नियमों को निर्धारित किया है। जिनके पालन करने से ही धर्म क्षेत्र के लोग प्रेम से रह सकेंगे और वर्तमान समय जो धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे हैं, वे समाप्त होंगे। सभा में ब्रह्माकुमार महेन्द्र ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहन ने किया।

आध्यात्मिक शक्ति ही विश्व में शान्ति लायेगी

—रामचन्द्र रथ

विश्व शान्ति महासम्मेलन के दूसरे दिन आज खुले अधिवेशन में बोलते हुए भारत सरकार के रसायन एवं उर्वरक राज्य मंत्री भ्राता रामचन्द्र रथ ने कहा कि हमारा देश एक आध्यात्मिक देश है। भले ही हमारे लोग गरीब हैं, परन्तु उनमें शान्ति एवं करुणा है। विकसित देशों में जहां आज भारी अशान्ति, तनाव एवं हिंसा है, उसकी भेंट में हमारे देश में कई गुना कम अपराध एवं हिंसा है, क्योंकि हमारे लोगों को आत्मानुभूति एवं परमात्मा में विश्वास है। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति आध्यात्मिक हो जाये एवं ईश्वर से जुड़ जाये, तो निश्चय ही उसके मन में शान्ति आयेगी। चूंकि व्यक्ति से ही समाज एवं संसार बना है, अतः व्यक्ति की शान्ति ही सारे विश्व को शांत बनायेगी। उन्होंने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन की सराहना करते हुए कहा कि सदियों से भारत आध्यात्मिक गुरू रहा है और वर्तमान सम्मेलन में भी विश्वभर से उपस्थित लोग इस शान्ति की धारा को विश्व के कोने-कोने में ले जायेंगे और एक ऐसा वायुमण्डल प्रवाहित होगा कि विश्व में शान्ति हेतु जनमत तैयार होगा और लोग हथियारों की दौड़ एवं शोषण को समाप्त करेंगे, उन्होंने कहा कि हमारी प्रधानमंत्री भी निर्गुट देशों के सम्मेलन में विश्व शान्ति हेतु प्रयासरत रही हैं। क्योंकि भारत एक शान्तिप्रिय देश है। भारत में विभिन्न जाति, धर्म एवं सम्प्रदायों का एक सुन्दर गुलदस्ता है, उसका एक रूप मुझे इस संस्था में देखने को मिल रहा है, जहाँ अनेकों धर्मों, सम्प्रदायों एवं देशों के लोग बैठे, प्रेम एवं सौहार्द्र का वातावरण बना कर विश्व शान्ति हेतु विचार-विमर्श कर रहे हैं।

लन्दन सेवा केन्द्रों की संचालिका ब्र० कु० जयन्ती ने अपने सारगर्भित भाषण में बताया कि यदि विश्व की सभी मनुष्यात्माएं अपना ज्ञान का तीसरा नेत्र खोल लें, तो अवश्य ही उनकी दृष्टि समभाव वाली हो जायेगी और समभाव आने से ही विश्व बन्धुत्व की भावना आयेगी। जब विश्व-बन्धुत्व होगा, तो शान्ति आ ही जायेगी। तीसरा नेत्र खोलने का तात्पर्य उन्होंने आत्मज्ञान एवं राजयोगी बनना बताया। आत्मा ही इस शरीर को चलाती है, यह शरीर जड़ है, आत्मा चैतन्य है। आत्म ज्ञान न होने के कारण ही अज्ञानतावश विश्व में तनाव एवं अशान्ति है।

सभा की कार्यवाही का संचालन जयपुर की ब्रह्माकुमारी राधा, एडवोकेट ने किया। अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी मनोहर इन्द्रा जी ने की।

(शेष पृष्ठ २१ का)

अनीता पंजाब, अम्बिका बेंगलोर, मंगला महाराष्ट्र, मंजू उड़ीसा, रूपा ट्रिनीडाड, हैलिना कोलन जर्मनी, लिज आस्ट्रेलिया, डैनिस ब्राजील, बारोनिवा फ्रांस, थेरलिन कनाडा, मारग्रेट आयरलैण्ड, आन्ने स्वीडन, लिन लंदन थीं।

ये सभी कन्याएं विश्व भर में ईश्वरीय सेवा पर जाकर विश्व शान्ति के महान कार्य करेंगी एवं अज्ञान के अन्धकार में डूबे हुए मानव को ज्ञान का तीसरा नेत्र प्रदान करेंगी।

माउण्ट आबू १० फरवरी

कलम एवं संचार की शक्ति से भाई चारा एवं जन-जन में शान्ति स्थापित हो सकती है

ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी

द्वितीय विश्व शान्ति महासम्मेलन में विश्व भर से पधारे २०० से अधिक पत्रकारों एवं संचार साधनों से सम्बन्धित प्रतिनिधियों का विशाल सम्मेलन विश्व शान्ति की ज्वलन्त समस्या पर गंभीर विचार विमर्श हेतु ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मेडिटेशन हाल में हुआ। इस सम्मेलन में विश्व के ४१ देशों से पधारे प्रमुख पत्रकारों एवं रेडियो, टी० वी० आदि के प्रतिनिधियों का परिचय कराया गया। इस गोष्ठि का प्रमुख विषय था "शान्ति की स्थापना में संचार माध्यमों का उत्तरदायित्व"। प्रमुख लेखक एवं सम्मेलन के प्रमुख प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द्र जी ने इस गोष्ठी की अध्यक्षता की। उन्होंने पत्रकारों के गुरुतर उत्तरदायित्व को समझाते हुए बताया कि कलम की ताकत महान है। अखबार एवं रेडियो, टी० वी० की प्रकाशित खबरें जहां विश्व में तनाव, कलह एवं वैमनस्य को बढ़ा देती हैं, वहां यदि वे कलम एवं संचार की ताकत से चाहें तो शान्ति की धारा, भाई-चारा भी जन-जन में पैदा कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमार करुणा जी, यू० एन० आई० के संवाददाता एवं संस्था के जन सम्पर्क अधिकारी ने अपने विदेश भ्रमण के अनुभव सुनाते हुए बताया कि वे वहाँ मीडिया के लोगों से मिले और पाया कि वे लोग संसार की हर घटना के बारे में पूर्ण जागरूक हैं। लेकिन उनके स्वयं के मन में इतना भारी तनाव रहता है कि वे कुछ भी विश्व की घटनाओं के लिए अपना योगदान नहीं कर पाते। जब मैंने उन्हें राजयोग की शक्ति का अनुभव कराया तो उन्होंने अनुभव किया कि राजयोग से तनाव की समाप्ति होकर सही निर्णय एवं पूर्ण स्फूर्ति रहती है। अतः संचार माध्यमों से सम्बन्धित जन यह राजयोग सीखें तो उनके दिमाग के शान्त निर्णय अन्यों को शान्ति देंगे।

भारत में ग्याना के हाई कमिश्नर स्टीव नारायण जी जो कि ८ वर्ष से इस राजयोग के अभ्यासी हैं, ने अपने अनुभव पूर्ण वक्तव्य में बताया कि यदि पत्रकार चाहे तो अपनी लेखनी से आग उगल कर समाज में मारकाट करा सकता है, यदि पत्रकार चाहे तो शान्तिपूर्ण-मैत्रीपूर्ण बातें लिखकर प्रेम की धारा बहा सकता है। उसके लिये पहले पत्रकारों को अपनी मनोवृत्ति को ही शान्तिमय बनाना होगा और वह शान्ति मिलती है—राजयोग के अभ्यास से। यह राजयोग पूर्ण वैज्ञानिक है, बुद्धिगम्य है, सहज है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में अशासकीय संगठन ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रतिनिधि एवं प्रवक्ता ब्रह्माकुमारी मोहिनीजी ने राजयोग का क्रियात्मक अभ्यास एवं अनुभूति पत्रकारों को कराई।

इस अवसर पर एक पत्रकार वार्ता भी रखी गई, जिसको प्रमुख प्रवक्ता ब्र० कु० जगदीशचन्द्र जी ने सम्बोधित किया और पत्रकारों के प्रश्नों के सटीक उत्तर देते हुए उन्हें भी विश्व शान्ति के कार्य में सहयोगी बनने की अपील की।

मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने अपने प्रेमपूर्ण प्रवचन में पत्रकार बन्धुओं एवं बहनों से कोई न कोई बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा ली, जिसे पत्रकारों ने सहर्ष स्वीकार करके बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांसाहार, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि छोड़ने का लिखकर वायदा किया।

कार्यवाही का संचालन इन्दौर ज़ोन के निर्देशक ब्र० कु० ओमप्रकाश जी ने किया।

माउण्ट आबू १० फरवरी

महिलाओं की समस्याओं का समाधान पुरुषों के खिलाफ चलाये आन्दोलन से नहीं वरन् आपसी सहयोग से ही होगा

—श्रीमती अनवर सादात

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व शान्ति महा-सम्मेलन के अन्तर्गत "समाज में पुरुषों एवं महिलाओं की संयुक्त भूमिका" एवं "महिलाओं में अपराधिक वृत्ति की रोकथाम" विषय पर विशेष महिला विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न देशों की विशिष्ट महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि मिस्र के दिवंगत राष्ट्रपति अनवर सादात की धर्मपत्नी श्रीमती जहां-अल-सादात ने कहा कि महिलाओं द्वारा अधिकारों की मांग लेकर पुरुषों के खिलाफ चलाये जाने वाले किसी भी आन्दोलन के मैं व्यक्तिगत रूप से खिलाफ हूं। श्रीमती सादात ने जोर देकर कहा कि **समाज में पुरुष एवं महिलाओं में आपसी समझबूझ, सद्भावना, प्रेम व आदर से ओत-प्रोत संयुक्त भूमिका होनी चाहिये।**

प्रसिद्ध महिला पत्रिका "फैमिना" की सम्पादिका श्रीमती विमला पाटिल ने ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा नये सुख-शान्तिमय समाज की स्थापना के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों ने सारे विश्व की महिलाओं को गौरवान्वित किया है, आपने नये समाज की स्थापना में "विकारों पर विजय" प्राप्त करने की बात का जोरदार समर्थन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजयोग शिक्षक-शिक्षिका प्रशिक्षण केन्द्र आबू की मुख्य निर्देशिका ब्रह्माकुमारी रत्नमोहिनीजी ने कहा कि आज पुरुष एवं महिलाओं के दैहीक भान से ऊपर उठकर आत्मा का सम्बन्ध जाग्रत रखने की आवश्यकता है। आपने सभी महिलाओं से अपेक्षा व्यक्त की कि यदि महिलाएं अपने सच्चे स्वरूप को जानकर शक्ति स्वरूप में विश्व सेवा का बीड़ा उठायें तो केवल समाज ही नहीं, सारे विश्व को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

गोष्ठी में सम्मिलित अन्य वक्ताओं में प्रसिद्ध पत्रिका "मिरर" की मुख्य सम्पादिका कु० प्रभा गोविन्द, डा० कृष्णा अग्निहोत्री, ट्रिनीडाड केरेबियन कौंसिल की पूर्व सचिव कु० एनी किटोन, मनीला की कुमारी लूसी, लन्दन में श्रीमती मौरिन गुडमेन आदि-आदि ने भी भाग लेकर अपने प्रेरणास्पद विचार व्यक्त किये। गोष्ठी के अन्तर्गत वक्ताओं एवं श्रोताओं के आपसी-विचार विमर्श द्वारा विश्व शांति की दिशा में महिलाओं के योगदान पर ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय के निर्देशन में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

विश्व को विनाश से बचाने हेतु विश्व शान्ति सम्मेलन अति महत्वपूर्ण एवं सामयिक है

युद्ध से बचने का उपाय--आध्यात्मिक शक्ति का विकास

राज्यपाल ओ० पी० मेहरा

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम ओमप्रकाश मेहरा जी ने आज द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का विश्व भारी तनाव की स्थिति से गुजर रहा है। भयंकर विनाशकारी अणु बम एवं मेगाटन बम तैयार हो गये हैं, जिनसे कुछ ही मिनटों में सारा विश्व विनाश के मुंह में चला जायेगा। विश्व की सरकारें अपने बजट का भारी धन आज सेना एवं हथियारों के ऊपर खर्च कर रही हैं। हथियारों की दौड़ में जितना धन बर्बाद किया जा रहा है, उसका कुछ हिस्सा यदि मानव के कल्याण हेतु खर्च किया जाये तो अमन-चैन हो जाये, लेकिन यह मानव मन की विकृति ही है कि अपने मौत का सामान स्वयं ही तैयार कर रहा है। राज्यपाल जो स्वयं भी पहले भारत की वायुसेना में उच्च पद पर रह चुके हैं, अपने अनुभव युक्त भाषण में युद्ध की भीषणता का मार्मिक वर्णन करते हुए कहा कि युद्ध से कभी शान्ति नहीं आ सकती, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर का हवाला देते हुए कहा कि उसमें लिखा है कि युद्ध पहले मनुष्य के मन में आता है, फिर मैदान में। अतः मानव की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने की अति आवश्यकता है। क्योंकि वर्तमान समय मानव की मनोवृत्ति दूषित हो चुकी है। छल, कपट, प्रपंच, अत्याचार एवं शोषण का बोलबाला है, इसके लिये महात्मा गांधी, बुद्ध एवं विवेकानन्द से लेकर आज तक भारी प्रयास हो रहे हैं कि मानव की मनोवृत्ति को शुद्ध करके वैचारिक क्रान्ति लाकर आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास द्वारा दया, क्षमा, करुणा, प्रेम का वातावरण बनाया जाये। इस क्षेत्र में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि विश्व भर से इस सम्मेलन में पधारे प्रतिनिधि अवश्य ही क्रियात्मक कदम विश्व शान्ति हेतु उठायेंगे।

भारत के भू० पू० सेनाध्यक्ष जनरल के० एम० करिअप्पा ने कहा कि युद्ध के समय भगवान को भूलकर सैनिक को याद किया जाता है, जबकि सैनिक युद्ध में विश्वास नहीं करता है। उसका प्रयास मानव शान्ति का ही होता है। जनरल करिअप्पा ने कहा कि इस तरह युद्धों के पीछे युद्ध ही चलते रहते हैं। उन्होंने इससे बचने का उपाय आध्यात्मिक शक्ति का विकास बताया। श्री करिअप्पा का विश्वास था कि मानव के मन में युद्ध काम, क्रोध, लोभ, लालच की भावनाऐं हैं, उनको राजयोग के अभ्यास से दूर किया जा सकता है। इसके लिये ब्रह्माकुमारियों के किये जा रहे प्रयासों की उन्होंने सराहना की।

इस अवसर पर भारत माता मन्दिर के हरिद्वार के प्रधान स्वामी सत्य मित्रानन्द जी के लिखित विचार भी उनके मौन के कारण प्रेम बहन द्वारा उनकी उपस्थिति में पढ़कर सुनाये गये। उन्होंने सम्मेलन की सफलता की कामना की।

इससे पूर्व ओम शान्ति भवन के प्रांगण में राज्यपाल ओ० पी० मेहरा का भव्य स्वागत किया गया। ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी, दादी प्रकाशमणी जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

माउण्ट आबू ११ फरवरी

समाचार पत्र राजनैतिक समाचारों के बजाय सामाजिक समाचारों को प्रमुखता दें, तो मानव का कल्याण होगा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व शान्ति महा-सम्मेलन के तृतीय दिन आज विश्व शान्ति भवन की आर्ट गैलरी में समाचार संचार माध्यमों के प्रतिनिधियों के लिये आयोजित विचार गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए लन्दन की प्रमुख पत्रकार श्रीमती लिज हाकिन्सन ने कहा कि समाचार पत्रों को समाज की बुराईयों को दूर करने के लिये कार्य करना चाहिये और वे कर भी सकते हैं। लेकिन देखा गया है कि कुछ निहित स्वार्थों एवं अखबार के मालिकों के दबाव के कारण पत्र प्रतिनिधि सामाजिक समस्याओं से विमुख होकर भड़काने वाली चटपटी राजनैतिक खबरें ही ज्यादा छापते हैं, इससे विश्व में अशान्ति बढ़ रही है।

पंजाब के बृजेन्द्रसिंह जी ने कहा कि समाचार पत्रों से हमारी जिन्दगी पर गहरा असर पड़ता है, क्योंकि जो बात हम देखते हैं, सुनते हैं, उसका नहीं वरन् जो हम पढ़ते हैं, उसका मस्तिष्क पर तुरन्त एवं स्थायी प्रभाव पड़ता है। उसी अनुसार मनुष्य की मनोवृत्ति बनती है और जैसी मनोवृत्ति होगी। वैसा ही व्यक्ति बनेगा, उस व्यक्ति का वैसा ही प्रभाव समाज पर पड़ेगा, क्योंकि व्यक्तियों से ही समाज बना है। अतः आज आवश्यकता है कि पत्रकार सामाजिक परिवर्तन को एक मिशन मान कर कार्य करे, तो एक ऐसी चेतना पैदा होगी, जिससे साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद के झगड़े एवं सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में मदद मिलेगी।

प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया के विशेष प्रतिनिधि भारतभूषण जी ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सामाजिक परिवर्तन एवं विश्व शान्ति हेतु किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यहाँ पर जो कहते हैं, वह करते हैं। **प्रेम, पवित्रता एवं शान्ति की पवित्र धारा यहां बहाई जा रही है।** उस धारा को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने हेतु संचार माध्यम सहयोग करें तो सामाजिक परिवर्तन का एवं विश्व शान्ति का कार्य सहज हो जायेगा।

'नवभारत टाइम्स' बम्बई के सह सम्पादक डा० बाल्से ने गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पत्रकार जो चीज देखता है, वही नहीं वरन् उसकी गहराई में भी जाता है और यथार्थ को सबके सामने रख देता है। अतः सामाजिक परिवर्तन एवं विश्व शान्ति का कार्य भी पत्रकार आसानी से कर सकते हैं।

'हिन्दुस्तान' बम्बई के सह सम्पादक आडवानी जी ने गोष्ठी में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य की जैसी दृष्टि होती वैसी ही सृष्टि बन जाती है। उन्होंने कहा कि यह दुःख का विषय है कि आज पीत पत्रकारिता का जोर है। भड़कीली, सनसनीखेज खबरें एवं राजनैतिक खबरें ही ज्यादा छप रही हैं। इसके बजाय नैतिक चारित्रिक विकास एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान की प्रेरणा-स्पद खबरें छापें तो समाज का एवं विश्व का कल्याण होगा। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यों की, विश्व परिवर्तन लाने की पहल का समर्थन करते हुए कहा कि बहुत से लोग सोचते हैं कि ये ब्रह्माकुमारियां कैसे विश्व परिवर्तन लायेंगी, उनसे मेरा कहना है कि जब एक व्यक्ति के दिमाग से उत्पन्न एटम बम सारे विश्व का विनाश कर सकता है, तो ब्रह्माकुमारियों का योजना बद्ध पवित्र प्रयास क्यों न सफल होगा। निश्चय ही विश्व परिवर्तन होगा, खुशहाली आयेगी।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर शोभा यात्रा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व महा सम्मेलन के प्रथम दिन अरावली की बलखाती पहाड़ियों के बीच लगभग दो किलोमीटर लम्बी शोभा-यात्रा निकाली गई, जिसमें विश्व विद्यालय के देश-विदेश से आये तीन हजार से अधिक सदस्यों, प्रतिनिधियों एवं अतिथियों ने भाग लिया।

शान्ति के प्रतीक श्वेत वस्त्र पहने लम्बे जुलूस में सबसे आगे चार घोड़ों पर दो विदेशी भाई बहनें हाथों में झण्डे लिये बैठे थे। बीच-बीच में जीप गाड़ियों में माइक, झण्डे, बैनर और सदस्यों के हाथों में शान्ति श्लोक की तख्तियां लिये हुए थे।

विशाल शान्ति यात्रा में गुजरात और आस्ट्रेलिया की दो आकर्षक एवं अभूतपूर्व झांकियां भी प्रदर्शित की गईं। गुजरात ने "कल का शान्तिमय स्वर्णिम भारत" तथा आस्ट्रेलिया ने "यूनिवर्सल ब्रदरहुड फार वर्ल्ड पीस" शीर्षक से झांकी निकाली।

शांति यात्रा को माउण्ट आबू पाण्डव भवन से आरम्भ कर नगर के विभिन्न रास्तों से निकाला जहां नगर पालिका, व्यापारियों के समुदायों, होटल संघों आदि द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। शान्ति यात्रा का नेतृत्व सहायक मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने किया।

समाचार पत्र राजनैतिक समाचारों के बजाय सामाजिक समाचारों को प्रमुखता दें, तो मानव का कल्याण होगा

(पृष्ठ १६ का शेष)

अंग्रेजी के पत्र 'प्यूरिटी' के सम्पादक बृजमोहन जी ने गोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाचार पत्रों में जहां विवाह के, खेलकूद के, विज्ञापन के, राजनीति के समाचारों को छापने के लिये स्थान रखा जाता है, वहां आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान के कार्यों के प्रकाशन हेतु भी स्थान होना चाहिये। चूंकि पत्रकारों की दृष्टि दूरान्देशी होती है। अतः उसे पहले स्वयं ही अपने जीवन को आदर्शमय, पवित्र बनाना आवश्यक है, ताकि वह प्रलोभनवश पीत पत्रकारिता का शिकार न हो जाये। उसके लिये यदि पत्रकार राजयोग का अभ्यास कर लें तो वे समाज के उत्थान के लिये अपने हृदय से कार्य करेंगे।

गोष्ठी में प्रेरणास्पद विचार विमर्श हुआ। संचालन संयुक्त राष्ट्र संघ के अशासकीय संगठनों की ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी गायत्री ने किया।

राजयोग द्वारा मानव मन को बदल उसमें विवेक जागृत किया जा सकता है

(पृष्ठ १० का शेष)

ने बताया कि अशान्ति का कारण पांच विकार— काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार है। यह संस्था इन विकारों को छोड़ने की क्रियात्मक शिक्षा राजयोग सिखा रही है, अतः अवश्य ही शान्ति के प्रयास सफल होंगे।

विश्व भर से पधारे हुए कुछ विशिष्ट प्रतिनिधियों ने मंच पर उपस्थित होकर सम्मेलन की सफलता हेतु अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त कीं।

भ्राता रमेश शाह, वर्ल्ड स्प्रिच्युवल ट्रस्ट के प्रबन्ध निर्देशक ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम में संगीत असित देसाई एवं बहन हेमा देसाई ने भावपूर्ण भजनों द्वारा विश्व शान्ति की खोज में पधारे प्रतिनिधियों को परमपिता की याद में तन्मय कर दिया।

माउण्ट आबू १० फरवरी

विश्व परिवर्तन का कार्य युवा वर्ग द्वारा ही किया जाएगा

—रामचन्द्र रथ

विश्व शान्ति सम्मेलन में युवकों के लिये आयोजित गोष्ठी में "युवक एवं विश्व परिवर्तन" विषय पर अपने सारगर्भित भाषण में भारत सरकार के रसायन एवं उर्वरक मंत्री भ्राता रामचन्द्र रथ ने कहा कि युवक किसी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। विश्व का इतिहास साक्षी है कि जब भी कोई क्रान्ति या परिवर्तन विश्व में आया, उसमें युवकों की भूमिका सराहनीय रही है। उन्होंने इतिहास के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि गांधी, नेहरू, सुभाष, रामकृष्ण, महावीर, दयानन्द, विवेकानन्द, रामतीर्थ एवं मार्क्स आदि जितने भी युगदष्टा हुए हैं, वे सभी युवा थे। उनके कार्य आज भी हमारे लिये प्रेरणा के स्रोत हैं। आज भी जब कि विश्व में भारी अशान्ति है, शोषण है, हिंसा है, तनाव है ऐसे वातावरण में परिवर्तन लाकर विश्व में सुख-शान्ति सौहार्द्र एवं एकता लाने हेतु एक बड़ा कार्य करना है। इस गुरूतर कार्य को निश्चय ही युवा वर्ग के सहयोग से पूरा किया जायेगा। उन्होंने इस बात पर भारी हर्ष प्रकट किया कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हजारों की संख्या में ऐसे उत्साही एवं समर्पण भाव वाले दृढ़ निश्चयी युवक-युवतियां हैं, जिन्होंने इस महान कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया है। निश्चय ही उनके त्यागमय, तपस्यामय, सेवामय जीवन से विश्व में ऐसा वातावरण बनेगा और जनमत तैयार होगा कि लोग युद्ध एवं हिंसा की बात भूल कर प्रेम भाव से जीवनयापन कर सकेंगे। जहाँ संकल्प शक्ति वाले युवा हैं, वहां सफलता है।

ब्रह्माकुमार मृत्यंजय जो कि इस सम्मेलन के युवा प्रभारी सचिव हैं ने युवकों के लिये एक आचार संहिता प्रस्तुत की। इस आचार संहिता में कुछ दिशा-निर्देश हैं कि युवा वर्ग उन सैन्य संगठनों का बहिष्कार करे, जो हथियारों से लैस होकर हिंसा के कारण बनते हैं। युवक दहेज प्रथा, धूम्र-पान, जाति भेद, धर्मभेद, सम्प्रदाय भेद का विरोध करें। जो व्यक्ति, समाज या समुदाय इन बातों को फैलायें, उनका बहिष्कार करें। युवक, शान्ति, प्रेम, सौहार्द्र एवं विश्व बन्धुत्व की भावनाएं बढ़ाने में सहयोगी बनें।

सम्मेलन में शहरी पर्यावरण संस्था बम्बई के डा० रश्मि मयूर, माउण्ट आबू के परगनाधीश युवा सुनील अरोरा। सिडनी के ब्रह्माकुमार चार्ली, जयपुर की ब्रह्माकुमारी पूनम, हांगकांग की ब्रह्माकुमारी मौरीन चैन ने भी युवकों का विश्व परिवर्तन में महत्व एवं उनके आध्यात्मिक जीवन पर प्रभावी विचार व्यक्त किये।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता लन्दन सेवा केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी जयन्ती बहन ने की। गोष्ठी का संचालन बम्बई की ब्रह्माकुमारी योगिनी कर रही थीं।

विज्ञान एवं आध्यात्म गोष्ठी

आध्यात्मिकता के अनुभव से विज्ञान बौद्धिक योग्यता बन जायेगा

ब्र० कु० मोहिनी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन की वैज्ञानिकों के लिये आयोजित गोष्ठी में विज्ञान एवं अध्यात्म विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गुजरात विधानसभा के उपाध्यक्ष भ्राता रामनिकला धामी ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि विज्ञान ने बहुत प्रगति की है, परन्तु यह विज्ञान किसी का दिल नहीं बदल सकता। अतः विज्ञान विनाश का साधन बनकर रह गया है। उन्होंने कहा कि केवल भौतिक उन्नति से विश्व में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है। इसलिये हमें आध्यात्म का सहारा लेना आवश्यक है। आज दुनिया के तमाम लोग अज्ञान एवं बीमारी से पीड़ित हैं, उनके लिये आज संसार की बड़ी से बड़ी शक्तियां रूस एवं अमेरिका भी सुख-शान्ति प्रदान नहीं कर सके। वह यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अपने साधारण लेकिन प्रभावशाली आध्यात्मिक साधनों एवं शिक्षकों द्वारा देश, जाति, धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर रहा है।

वेस्ट जर्मनी से पधारे मनोविज्ञान के प्रोफेसर फ्रेक ने कहा कि मैं यहां मात्र इसलिये आया हूँ कि आप सबको वर्तमान समय विश्व में बन चुके एवं बन रहे अणु आयुधों की विनाशकारी शक्ति से अवगत करा सकूं। इन विनाशकारी बमों की भयंकरता से विश्व को बचाने के लिये मेरे अलावा ३००० वैज्ञानिक साथी लगे हुए हैं। आज विश्व में जो बमों का जखीरा जमा है, उससे एक बार नहीं वरन् कई बार हमारे ऐसे कई विश्वों का कुछ ही मिनटों में संहार हो जायेगा। उन्होंने कहा कि जैसे ही मैंने यह सुना कि भारत में ब्रह्माकुमारियां विश्व को विनाश से बचाने के लिये विश्व शान्ति सम्मेलन का आयोजन कर रही हैं, तो मैं भागा चला आया और आज यह देखकर मुझे भारी हर्ष हो रहा है कि यह संस्था विश्व शान्ति के लिये सराहनीय कार्य कर रही है।

गोष्ठी के मुख्य अतिथि भ्राता एडवर्ड एफ० कारपैन्टर, डीन वैस्ट मिन्स्टर लन्दन ने कहा कि मैं यहां ब्रह्माकुमारी बहनों के हार्दिक निमंत्रण पर आबू में कुछ सीखने की इच्छा से आया हूं और मुझे खुशी है कि मुझे यहां रहने पर सुखद अनुभव हो रहा है। उन्होंने कहा कि विश्व के इतिहास में ऐसी खतरनाक घड़ी कभी नहीं आई, जबकि विश्व विनाश के कगार पर खड़ा हो। जीवन रसायन शास्त्र एवं गणित के नियमों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अतः मानव-जीवन की रक्षा होनी ही चाहिये और वह होगी विज्ञान एवं अध्यात्म के समन्वय से।

संयुक्त राष्ट्र संघ में अशासकीय संगठनों की सलाहकार परिषद् की स्थायी सदस्य राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी, अमेरिका ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि हम आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त कर लें और अपनी आत्मिक शक्तियों को बढ़ा लें, तो विज्ञान अलग न रहकर बौद्धिक योग्यता बन जायेगा। सिडनी के ब्रह्माकुमार चार्ली ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का संचालन सानफ्रांसिस्को की ब्रह्माकुमारी डैनिस ने किया।

ईश्वरीय नियमों का अनुसरण करने से सुख-शान्ति की प्राप्ति हो सकती है

डॉ० जेम्स ओ० सी० जोन्ह,

विश्व शान्ति सम्मेलन के तीसरे दिन आज ५ विशेष गोष्ठियों का आयोजन अलग-अलग वर्ग समूहों—न्यायविदों, समाचार प्रसार माध्यमों, कलाकार एवं लेखकों एवं कूटनीतिज्ञ तथा राजनीतिज्ञों के लिये किया गया।

न्यायविदों के लिये आयोजित गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता कुरेशी ने कहा कि आज विश्व के सामने अनेक समस्यायें खड़ी हैं, जिनके भयंकर विनाशकारी परिणामों को देख, समझकर विश्व का प्रत्येक व्यक्ति चिन्तित है। भयंकर विनाशकारी अणु आयुध तैयार हैं, तो दूसरी तरफ मानव का नैतिक चारित्रिक इतना पतन हो चुका है कि अर्थालिप्सा से मनुष्य भयंकर पाप कर रहा है, धनोपार्जन करके विलासितापूर्ण जीवन बिता रहा है। लेकिन उसको इस भौतिक विलासितापूर्ण जीवन से शान्ति नहीं मिल रही है, इसीलिये आज भौतिक साधनों से सम्पन्न देशों के लोग जीवन से निराश होकर आत्म हत्यायें कर रहे हैं एवं शान्ति की खोज में भारत की ओर दौड़ रहे हैं। शान्ति तो आध्यात्मिक जीवन से ही मिलती है, जो हमारे देश में बच्चों की घुट्टी में ही पिला दी जाती है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहायक महासचिव डा० जेम्स ओ० सी० जोन्ह, ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि कुछ ऐसे सर्वमान्य नैतिक सिद्धान्त हैं, जो सब मनुष्यों के लिये समान रूप से लागू किये जा सकते हैं, दया, क्षमा, करुणा एवं प्रेम अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत माने जाते हैं। करुणा की भावना से प्रेरित होकर ही विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू० एच० ओ०) बिना किसी जाति धर्म, एवं देश की दीवारों के बन्धन में बंधे सारे विश्व के मानवों को सन् २००० तक स्वास्थ्य देने को कृत संकल्प है। इन मानव निर्मित नियमों के साथ ही कुछ ईश्वरीय नियम भी हैं, जिन नियमों का जीवन में अनुसरण करने से सुख-शान्ति प्राप्त की जा सकती है।

दिल्ली उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता भ्राता लालचन्द वत्स ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि सभी मानव निर्मित कानूनों की जड़ तो ईश्वरीय विधान के अन्तर्गत ही है। भले ही सभी ईश्वरीय नियमों को मानव नियमों में न अपनाया जा सके।

उन्होंने कहा कि यदि मनुष्य ईश्वरीय नियम पवित्रता को भंग करके अपने मन में विकार लाकर वैश्यावृत्ति करता है या लोभ के वशीभूत होकर भ्रष्टाचार करता है, तो ईश्वरीय नियम के तोड़ते ही मानवकृत नियम भी टूट जाता है और अपराध बढ़ता है। इसलिये यदि मानवीय कानूनों को प्रभावी बनाना है, तो पहले ईश्वरीय नियमों को अपनाना होगा। उसी के लिये प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय राजयोग की शिक्षाओं से मनुष्यों के क्रियात्मक जीवन में परिवर्तन लाने हेतु मर्यादा युक्त जीवन बनाने की शिक्षा दे रहा है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के जस्टिस गुमानमल लोढा, दिल्ली के जस्टिस आर० एल० गुप्ता,

आस्ट्रेलिया के एडवोकेट मारग्रेट एवं नेरोबी, अफ्रीका के राजयोग केन्द्रों संचालिका ब्रह्माकुमारी वेदान्ती सहित सभी वक्ता इस बात पर एक मत थे कि जब तक व्यक्ति में ईश्वरीय नियमों के प्रति आस्था एवं भय नहीं होगा, तब तक उसके द्वारा मानव निर्मित कानूनों का पालन कराना कदापि संभव नहीं है। यही कारण है कि आज का विश्व वर्तमान भयंकर स्थिति में आकर पहुंचा है। अतः विश्व शान्ति, प्रेम एवं सौहार्द्र के लिये आध्यात्मिक शिक्षा की परमावश्यकता है।

राजनीतिज्ञों एवं कूटनीतिज्ञों की गोष्ठी में ग्याना के भारत स्थित हाई कमिश्नर महामहिम स्टीव नारायण ने अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कुछ नैतिक मूल्यों का पालन करना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शान्ति एवं विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हो सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय लोभ, लालच एवं स्वार्थ की दुनिया में यह कठिन कार्य है। फिर भी कुछ सर्वमान्य नैतिक सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनका पालन करके भाईचारा पैदा होगा। इसमें सन्देह नहीं है। इस गोष्ठी में भाग लेने वाले अन्य वक्ताओं में बागोटा, कोलम्बिया की मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स की श्रीमती मारिया, अमेरिका में ब्रह्माकुमारीज राजयोग सेन्टर की ब्रह्माकुमारी मोहिनी, महाराष्ट्र के भू० पू० शिक्षा मंत्री मधुकर चौधरी, हांगकांग एवं सिंगापुर में भारत के भू० पू० राजदूत श्री सिद्धार्थाचार्य, गुजरात शहरी सहकारी बैंक के अध्यक्ष विट्ठल भाई पी० अमीन सहित सभी वक्ताओं का विचार था कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को आध्यात्मिक सिद्धान्तों की समरूपता द्वारा मधुर बनाकर विश्व शान्ति के कार्य में सहयोग किया जा सकता है।

विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश की पवित्र कन्याओं का समर्पण समारोह सम्पन्न

विश्व शान्ति भवन के विशाल सभागार में आज विश्व भर से आई हुई राजयोग की प्रशिक्षित पवित्र बहनों का ईश्वरीय सेवा हेतु समर्पण समारोह विश्व भर से पधारे हुए हजारों प्रतिनिधियों एवं पत्रकारों के समक्ष ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समर्पण समारोह का महत्व बताते हुए दादीजी ने बताया कि ये कन्याएं सच्चे अर्थों में चैतन्य दुर्गा, शक्ति, काली, सरस्वती, लक्ष्मी बन अपने परमपिता परमात्मा शिवबाबा के रुद्र ज्ञान यज्ञ में पतितों को पावन बनाने के महान ईश्वरीय कार्य हेतु समर्पित हो रही हैं। यह समर्पण किसी मानव के लिये नहीं, किसी प्रभाव के कारण नहीं, किसी दबाव के कारण नहीं, वरन् ये कन्याएं स्वेच्छा से अपने जीवन को पावन, श्रेष्ठाचारी बनाकर विश्व कल्याणकारी वरदानी बन औरों को भी ज्ञानामृत पिलाने हेतु समर्पण कर रही हैं।

स्टेज पर बैठीं कन्याएं चैतन्य देवियां ही दिखाई दे रही थीं। इन कन्याओं ने एक प्रतिज्ञापत्र शिव परमपिता परमात्मा के समक्ष समर्पण का पढ़ा कि हम विश्व की कन्याएं शिवबाबा द्वारा दिये गये ज्ञान रतनों को विश्व के कौने-कौने में जाकर फैलायेंगी और भागीरथी गंगा बन कर पतितों को पावन बना कर विश्व में शान्ति, प्रेम एवं पवित्रता फैलायेंगी।

इन कन्याओं को स्टेज पर उपस्थित स्वामी मनुवीर्य जी, महामण्डलेश्वर स्वामी निरंजनदास जी, दादी हृदयमोहिनी जी, बृजइन्द्रा जी, जानकी जी, चन्द्रमणी जी, भ्राता कारपैन्टर जी ने आशीर्वाद दिया।

मधुर-मधुर शहनाई गूंज रही थी, कन्याएं अपनी अलौकिक मां दादी जानकी जी, तथा प्रकाशमणी जी से गले मिल रही थीं। खशी में उल्लासित होकर हजारों प्रतिनिधियों एवं दर्शकों ने इस मनोहारी दृश्य का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया एवं अपनी शुभ कामनाएं प्रेरित कीं। समर्पण होने वाली कन्याओं में बहिन शील उदयपुर,

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वह दिन दूर नहीं जबकि सारा विश्व ब्रह्माकुमारियों से शांति का पाठ पढ़ेगा

वीरेन्द्र पाटिल, केन्द्रीय श्रम मन्त्री

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन के अन्तिम दिन आज एक खुले अधिवेशन में विश्व शान्ति भवन के विशाल सभागार में विश्व भर से पधारे हजारों प्रतिनिधियों के समक्ष अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए भारत सरकार के श्रम मंत्री भ्राता वीरेन्द्र पाटिल ने कहा कि मुझे यह देखकर भारी हर्ष हो रहा है कि मेरे देश की पवित्र बहिनें ब्रह्माकुमारियां आज विश्व भर में शान्ति का सन्देश बड़े मनोयोग के साथ समर्पणता के भाव से पहुंचा रही हैं। उन्होंने बताया कि केनिया देश में नेरोबी में वहां की सरकार ने एक राष्ट्रीय उत्सव किया था, उस उत्सव में भारत का वे प्रतिनिधित्व कर रहे थे, वहां पर सफेद वस्त्रधारी हमारी ये ब्रह्माकुमारी बहनें भी विशिष्ठ आमन्त्रित थीं। इन बहनों ने बड़ी लगन एवं प्रेम के साथ शान्ति का सन्देश एवं राजयोग की भारतीय पद्धति को उस सम्मेलन में वहां के लोगों को बताया। यह सब मुझे बड़ा अच्छा लगा कि मेरी बहनें मेरे देश की संस्कृति एवं शान्ति के सन्देश को किस तरह विश्व भर में फैला रही हैं, मैं वहीं इन बहनों से मिला तो बहनों ने मुझे इस कान्फ्रेंस में माउण्ट आबू पहुंचने का निमन्त्रण दिया, मैंने सहर्ष वह निमन्त्रण स्वीकार किया और आज आपके बीच में हूं।

पाटिल ने कहा कि मैंने दिल्ली में भी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम की शिक्षाओं को देखा है इनसे मैं बहुत प्रभावित हूँ और कह सकता हूँ कि वह दिन दूर नहीं जबकि सारा विश्व इन ब्रह्माकुमारी बहनों से शान्ति का पाठ पढ़ेगा।

उन्होंने कहा कि आज इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि विश्व विनाश के कगार पर पहुंच चुका है। ये विनाशकारी एटम बमों का जखीरा कुछ ही मिनटों में विश्व को नष्ट कर सकता है। दूसरी तरफ व्यक्ति का इतना भारी चारित्रिक पतन हो गया है कि वह धन के पीछे अपने धर्म को भूल जाता है। पूंजीपति श्रमिकों का शोषण कर रहे हैं। श्रमिक पूंजीपति का विश्वास नहीं करता तो पूंजीपति श्रमिक का विश्वास नहीं करता। इसका परिणाम होता है हड़तालें, तालाबन्दी एवं घेराव, तोड़-फोड़। इससे भी भारी अशान्ति पैदा होती है। इस सन्दर्भ में उन्होंने अहमदाबाद का एक अनुभव सुनाया कि वहां एक उद्योगपति ने ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा उद्योग में योग प्रदर्शनी लगवायी थी, उसका प्रभाव उस फैक्ट्री के श्रमिकों पर है। वह उद्योगपति पाटिल जी को अपनी फैक्ट्री दिखाने ले गया, उसने बताया कि वह अपने श्रमिकों से ८ के बजाय ७ घण्टे काम लेता है। एक घण्टा उनके योग अभ्यास के लिये है। फैक्ट्री में एक बड़ा राजयोग का कमरा बनाया गया है। जहां ड्यूटी पर आने पर आधा घण्टा एवं ड्यूटी से छूटने पर आधा घण्टा प्रत्येक श्रमिक ध्यान में बैठता है, योग करता है। इस एक घण्टे में राजयोग के अभ्यास से श्रमिकों के व्यवहार में भारी परिवर्तन आया है और उसका परिणाम कि फैक्ट्री की उत्पादन क्षमता ५० प्रतिशत बढ़ गयी है।

उन्होंने कहा कि आज विश्व की बड़ी भारी जनसंख्या भूख एवं अभाव से पीड़ित है? जब तक इन भूखों की भूख नहीं मिटती, गरीबी नहीं मिटती शान्ति नहीं हो सकती। ये बड़ी ताकतें

छोटे देशों को हथियार देकर लड़ा रही हैं।

अत: या तो गरीबी मिटेगी या यह संसार ही मिट जायेगा और यह निश्चित है कि इस अणु युद्धों में न तो आक्रान्ति बचेगा न आक्रान्त। अन्त में उन्होंने पुन: ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन की सफलता की शुभ कामनायें करते हुए यह विश्वास प्रकट किया कि बहुत शीघ्र ही जनमत ब्रह्माकुमारियों के साथ होगा।

भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति उपमंत्री श्री थुंगन ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि लोग कहते हैं स्वर्ग में बड़ी शान्ति एवं आनन्द है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि माउण्ट आबू के इस शान्ति भवन में कितना शांतिमय, प्रेममय कार्यक्रम चल रहा है! उन्होंने अपना अनुभव बताया कि हम राजनैतिक लोगों की सभाओं में कितनी अव्यवस्था, कितना हंगामा कितनी अशान्ति होती है, लेकिन यहाँ हजारों लोग विश्व भर से आये हैं, लेकिन कितने शान्त हैं। न कोई पुलिस न कोई वालियन्टिर। सब कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है। देश-देशान्तर के अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, विचारों के लोग कितने पारिवारिक मंच से यह विचार विमर्श कर रहे हैं। तो मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि शान्ति की धारा शान्ति का सन्देश माउण्ट आबू के इस शान्ति हाल से सारे विश्व में गूंजेगा, अवश्य गूंजेगा।

मिस्र के स्वर्गीय राष्ट्रपति अनवर सादात की धर्मपत्नी श्रीमती जहां-अल-सादात ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तहेदिल से कहा कि मैं कई दिन से यहां इन बहनों के सम्पर्क में हूँ और देख रही हूँ कि यहां पर हरेक के साथ कितना पारिवारिक स्नेह है, ये बहनें बहुत पवित्र एवं उच्चस्थिति प्राप्त देवियां हैं। इनके अन्दर प्यार की धारा बहती है। यहां का सात्विक भोजन एवं राजयोग का अभ्यास मेरे मन को बेहद पसन्द आया है! मैं वायदा करती हूं कि इन बहनों के विश्व शान्ति के प्रयासों में पूर्ण सहयोगी हूँ और विश्व के कोने-कोने में जहाँ मैं जाऊंगी, बताऊंगी कि ब्रह्माकुमारी बहनें क्या हैं, इनका कार्य कितना महान् है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहायक महासचिव डा० जैम्स ओ० सी० जोन्ह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए यूनिवर्सल पीस चार्टर का समर्थन दिया और तहेदिल से बताया कि मैं एक ईसाई हूं, लेकिन मैंने देखा कि इस संस्था में पूर्ण भाई चारा है, प्रेम है, सौहार्द्र है, पवित्रता है। जो यहां कहा जाता है वह ये ब्रह्माकुमार-कुमारियां अपने जीवन में कर दिखाते हैं। अत: विश्व शान्ति का कार्य इनके द्वारा अवश्य पूर्ण होगा। मैं स्वयं भी पूर्णरूपेण यहां के राजयोग का अभ्यास करूंगा।

अहमदाबाद के जस्टिस कुरेशी ने यूनिवर्सल पीस चार्टर को समर्थन हेतु प्रस्तावित किया जिसको तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। इस चार्टर का अनुमोदन ग्याना के भारत स्थित उच्च आयुक्त महामहिम स्टीव नारायण ने किया था।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी ने अपने प्रेमपूर्ण शब्दों में सभी का स्वागत किया और कार्य में पीछे शक्ति प्रदान करने वाले परमपिता परमात्मा शिव बाबा का कोटि-कोटि धन्यवाद किया जो सारे विश्व की आत्माओं को सुख शान्ति पवित्रता का वरदान देने यह रूद्र ज्ञान यज्ञ रचकर अपने बच्चों से यह सर्व कार्य करा रहा है।

पीस चार्टर को संस्था के प्रमुख प्रवक्ता एवं ज्ञानामृत, वर्ल्ड रिन्युअल के मुख्य सम्पादक भ्राता जगदीश चन्द्र जी ने ब्यौरेवार पढ़कर सुनाया।

इस खुले अधिवेशन में बोलते हुए अन्य वक्ताओं में रामकृष्ण बजाज, प्रमुख उद्योगपति, दादी जानकीजी, उप मुख्य प्रशासिका, डा० कारपैन्टर आदि प्रमुख थे।

द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन के लिये विश्व भर से अनेक हस्तियों के शुभकामना सन्देश

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा दिनांक-६ फरवरी से १२ फरवरी ८४ तक हुए द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन की सफलता हेतु विश्व भर से अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों के शुभ कामना सन्देश प्राप्त हुए। इस अवसर पर मारीशस देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री एवं वर्तमान में गवर्नर जनरल भ्राता सर रामगुलाम ने अपने एक सन्देश में लिखा है कि वर्तमान समय राष्ट्रों के बीच शान्ति एवं सौहार्द्र पैदा करने के लिये यह विश्व शान्ति सम्मेलन एक प्रेरणादायी भूमिका अदा करेगा, क्योंकि वर्तमान समय मानव जाति के विनाश का खतरा सामने है। अतः सम्मेलन में लिये गये निर्णयों को विश्व भर में शान्ति सन्देश के रूप में प्रसारित किया जाये। उन्होंने सम्मेलन की आयोजक संस्था को इसके आयोजन के लिये धन्यवाद देते हुए इसकी सफलता की शुभकामना की है।

नीदरलैण्ड के इन्टरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस के भ्राता नगेन्द्रसिंह जी ने अपने एक सन्देश में कहा है कि विश्व भर से शान्ति के प्रयासों के लिये एकत्रित होने वाले प्रतिनिधियों को हार्दिक शुभ कामनाएं, परमात्मा मदद करे।

तस्मानिया के प्रीमियर भ्राता रौबिन ग्रे ने अपने सन्देश में कहा है कि विश्व शान्ति के लिये किये जा रहे इस प्रयास का सारे विश्व के राष्ट्रों को समर्थन करना चाहिये। क्योंकि यह एक अति आवश्यक कार्य के लिये उत्तम शुरूआत है।

भारत सरकार के विदेश मंत्री भ्राता पी० वी० नरसिंहाराव ने अपने एक सन्देश में कहा है कि यह आध्यात्मिक विश्वविद्यालय जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ के अशासकीय संगठन का सदस्य है एवं आर्थिक सामाजिक परिषद का परामर्शदाता है, निश्चय ही विश्व शान्ति के लिये उद्देश्यपूर्ण उपलब्धियां विश्व को इस सम्मेलन द्वारा देगा।

भारत के योजना मंत्री भ्राता एस० बी० चह्वाण ने अपने शुभकामना सन्देश में कहा है कि— विश्व शान्ति हेतु किये जा रहे ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यक्रमों को इसलिये भी स्वागत किया जाना चाहिये कि वर्तमान समय विश्व भारी तनाव एवं संघर्ष की स्थिति में है।

मध्यप्रदेश सरकार के मुख्य मंत्री भ्राता अर्जुनसिंह जी ने अपने शुभकामना सन्देश में आशा व्यक्त की है कि विश्व शान्ति सम्मेलन में विश्व भर से विभिन्न वर्ग, धर्म एवं विचारों को मानने वाले पधारे प्रतिनिधि अवश्य ही बहुमूल्य योगदान विश्व शान्ति के प्रयासों के लिये करेंगे, ताकि विश्व में शान्ति एवं सौहार्द्र का वातावरण बन सके।

मध्यप्रदेश के राज्यपाल भ्राता भगवतदयाल शर्माजी ने अपने शुभकामना सन्देश में कहा है कि विश्व शान्ति सम्मेलन के प्रस्ताव एवं निर्णय अवश्य ही विश्व में शुभभावना एवं प्रेम एवं शान्ति का वातावरण बनाने में सहयोगी होंगे।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस भ्राता एस० मुर्तजा अली ने अपने शुभ-कामना सन्देश में कहा है कि इस संस्था के क्रिया-कलाप मानव के आध्यात्मिक एवं सासांरिक कार्यों में उन्नति लाकर उन्हें निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। यह विश्व शान्ति सम्मेलन इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है।

आन्ध्रप्रदेश के लोक आयुक्त जस्टिस भ्राता ए० एस० राव ने अपने शुभकामना सन्देश में आशा व्यक्त की है कि यह सम्मेलन अवश्य ही विश्व शान्ति के लिये एक लाभदायक रूपरेखा तैयार करेगा।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

आदरणीय भ्राता एडवर्ड कारपेन्टर, डीन आफ़ वेस्टमिनस्टर, लन्डन, ओम शान्ति भवन, आबू में एक खुले अधिवेशन में सम्बोधित करते हुए ।

विश्व-शांति सम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश से आई 16 कन्याओं ने स्वयं को ईश्वरीय सेवा अर्थ समर्पण किया । बड़ी बहिनों तथा अन्य महानुभावों ने उन्हें शुभ कामनाएं दीं ।

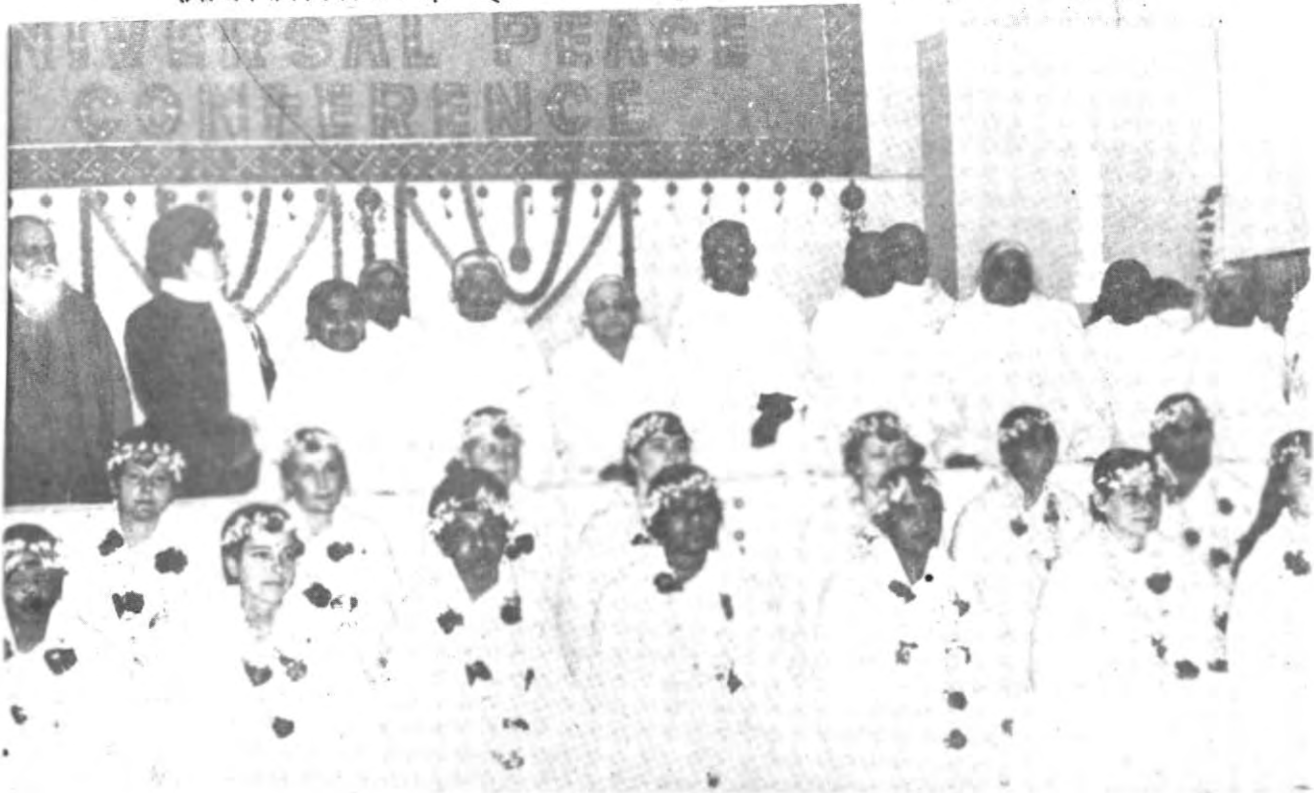

विश्व-शांति महासम्मेलन के समाप्ति समारोह में मंच पर (बाएं से) डॉ० जेम्ज ओ० सी० जोन्ह, सहायक महासचिव संयुक्तराष्ट्र संघ, दादी जानकी जी, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, भ्राता वीरेन्द्र पाटिल, केन्द्रीय श्रम तथा पुनर्वास मंत्री तथा भ्राता रामकृष्ण बजाज।

विश्व-शांति महासम्मेलन के 11 फरवरी के प्रात: सत्र में सम्बोधित करते हुए राजस्थान की विधान सभा उपाध्यक्ष जी। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० हैडि फिटक (प० जर्मनी) तथा ब्र० कु० चार्लस हाग (आस्ट्रलिया)।

चित्र में विश्व-शांति महासम्मेलन में श्रीमती हेमा देसाई, भ्राता आशित देसाई, मोहन भाई तथा अन्य, गीतों का कार्यक्रम पेश करते हुए।

हुबली (विद्यानगर) सेवा केन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में (बाएं से) ब्र० कु० इष्टलिंग जी, ब्र० कु० विश्वरत्न जी तथा ब्र० कु० राजकुमार जी विराजमान हैं।

कलकत्ता में स्नेह मिलन में (बाएं से) ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी ब्र० कु० दादी निर्मल शान्ता जी, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, कलकत्ता हाईकोर्ट की न्यायाधीश बहन पद्मा खास्तगीर जी तथा उनके परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित हैं।

भोपाल में भ्राता कन्हैया लाल शर्मा स्थानीय शासन मन्त्री (म० प्र०) योग शिविर में भाग लेते हुए।

अरेरा कालोनी भोपाल में भ्राता नान्थूराम अहिरवार खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मन्त्री, म० प्र० को ब्र० कु० अवधेश समझाते हुए।

गोहाटी में हुए आध्यतिमक कार्यक्रम में (बांए से) न्यायाधीश के० एम० लाबिरी, मुख्य न्यायाधीश टी० एम० मिश्रा, ब्र० कु० शीला, जोनाली, ब्र० कु० सदानन्द मंच पर उपस्थित हैं।

खंडवा में ब्र० कु० भगवती, हेमलता प्रसिद्ध लेखिका बहन महादेवी वर्मा को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

भोपाल अरेरा कालोनी सेवा केन्द्र पर खैरागढ़ के महाराजा साहब, म० प्र० पर्यटक विकास निगम के अध्यक्ष ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ खड़े हैं।

मोगा में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन एफ० एस० एल० फैक्ट्री के सीनियर डॉ० भ्राता जोगिन्द्र सिंह जी कर रहे हैं।

धार्मिक एवं भावनात्मक एकता हेतु ध्यान देने योग्य सिद्धान्त

जिसका विश्व शान्ति महासम्मेलन में धार्मिक नेताओं ने अनुमोदन किया

विभिन्न धर्मों तथा विश्वासों के मध्य एकता स्थापित करने के लिये निम्न आचार संहिता का निर्माण किया गया है। यह अवश्य है कि यदि इस आचार संहिता का पालन किया जाये तो यह धार्मिक सद्भावना पैदा करेगा और यह भावनात्मक एकता के लिये मार्ग प्रशस्त करेगा। चूँकि अशान्ति का मुख्य कारण साम्प्रादायिक विरोध अथवा संघर्ष है और यदि यह उमड़ पड़े तो यह जमीन आसमान एक कर सकता है। अत: धर्मोपदेशकों तथा अनुयायिओं के लिये आचार संहिता आवश्यक प्रतीत होती है।

विभिन्न धर्मों के उपदेशकों तथा अनुयायिओं के लिये सामाजिक तथा विभिन्न धर्मों के मध्य एकता हेतु ध्यान देने योग्य सिद्धान्त—

१—हम लोग प्रत्येक नर व नारी को आत्मा समझेंगे चाहे वे किसी भी धर्म के हों और इस प्रकार भाई और सम्पूर्ण मानव समाज को एक परिवार। इसलिये हम सब आध्यात्मिक प्रेम, सद्भावना तथा सहयोग के आधार पर अपने आपसी सम्बन्ध रक्खेंगे।

२—हम लोग अहिंसा, धैर्य एवं क्षमा को अन्तर्धर्म सम्बन्धी हेतु सबसे अधिक मानेंगे और जैसे कि हम अपने धर्म का आदर चाहते हैं वैसे ही दूसरे धर्मों को भी आदर देंगे।

३—हम लोग किसी भी धर्म की दुखती रगों को न तो सार्वजनिक रूप से छेड़ेंगे और न ही विशेषकर उन सभाओं में जिनमें कि उस धर्म से सम्बन्धित व्यक्ति उपस्थित हों, और न कभी भी ऐसे तरीके अथवा ऐसी भाषा का प्रयोग करेंगे जो कि दूसरे की भावना को ठेस पहुंचाने के दृष्टिकोण से प्रेरित हो। खासकर उस बिन्दु पर जिसमें उस धार्मिक विश्वास के लोग कोमल तथा संवेदनशील हों।

४—हमारा विश्वास है कि हर एक व्यक्ति को अपने धर्म अन्य धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करने का अधिकार है और उसे सहानुभूति और सच्चाई के तहत अच्छाइयों तथा बुराइयों को जानने-समझने के लिये समालोचना करने का भी अधिकार है किन्तु उसे यह अधिकार कदापि नहीं है कि वह अपने धर्म समेत दूसरे धर्मों की निंदा या अवहेलना, तुच्छता या उनके धार्मिक विश्वासों के लिये निंदात्मक भाषा का प्रयोग करे या धार्मिक मतों, कृत्यों, चिन्हों, धार्मिक स्थलों या पुन्य पैगम्बरों तथा सन्तों के प्रति घृणा फैलाये।

किन्तु यह ऐसे व्यक्तियों के अधिकार कदापि नहीं छीनता जो कि ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तियों के कृत्यों पर प्रकाश डाले कि जिन्होंने धर्म के नाम पर, चाहे उसे कोई भी नाम दिया जाये, दुष्टता दिखाई, देशों को रौंदा, दूसरों को सजा दी, या अमानवीय कृत्य किये, उन्हें हम मानवता का दुश्मन समझेंगे, चाहे वे अपने धर्म के ही प्रवक्ता क्यों न हों किन्तु इस निषेधात्मक कृत्य को किसी भी धर्म अथवा धर्म संस्थापकों के प्रति प्रयोग नहीं किया जायेगा।

५—हम लोग किसी भी जोर जबरदस्ती किये गये धर्मान्तरण को न तो अपना सहयोग देंगे, न उनके प्रति सहानुभूति रखेगें और न ही उसमें भाग लेंगे अथवा न ही अनपढ़ व अशिक्षित लोगों को धन का लालच देकर दूसरे पंथ में ले जायेंगे अथवा न ही उपासना का कोई स्थल दूसरे धर्म के उपासना स्थल को हटाकर बनायेंगे अथवा न ही कोई भवन निर्माण कार्य करेंगे अथवा कोई धार्मिक कृत्य इस तरीके से करेंगे जिससे कि शक, कड़वाहट, घृणा अथवा विरोध पैदा हो बल्कि उसके अलावा हम हमेशा मानवीय कृत्यों के लिये स्वेच्छिक सहयोग प्रदान करेंगे।

इस आशा से हम लोग सरकार से तथा जनता से सहयोग करेंगे। हम अपने जलूस निकालना

सभायें करना और विशेष समारोहों को मनाना, इस सावधानी के साथ करेंगे कि ये बुरी भावनाओं या तनाव या सामाजिक उपद्रव या विघ्न और न ही वे जोर जबरदस्ती दूसरे मतानुयायिओं की भावनाओं को ठेस पहुँचायें। और यदि जुलूस, समारोह आदि अपने अलग किसी धार्मिक समूह के हैं तो हम किसी भी प्रकार का प्रतिरोध पैदा नहीं करेंगे बल्कि एकता व सद्भाव का वातावरण बनायेंगे।

६ —यदि अपने धर्म को मानने वाले कुछ लोग हिंसा-लूट या घृणा फैलाने जैसे कृत्य दूसरे धर्मों के विरुद्ध करते हैं तो हम लोग उन्हें न तो छिपायेंगे न उन्हें धार्मिक स्थलों में शरण देंगे। न ही किसी को मार डालना—जैसे उनके कृत्यों को सही बतलायेंगे, चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों अथवा ऊपर वर्णित कृत्यों के अलावा कोई पाप कर्म करने वाले और धर्म को कलंकित करने वाले और दयालू, सत्य, प्रेमी और अति स्नेही ईश्वर जो सभी धर्मों के पिता परमात्मा हैं के प्रति विद्रोही है उन्हें ऐसा मानेंगे।

७—हम लोग धर्म को एक चारित्रिक शक्ति समझेंगे और अपने धार्मिक झुकाव को राजनीति से स्वतन्त्र, भ्रष्टाचारी असर से मुक्त ही नहीं रखेंगे किन्तु गन्दी राजनीति को भी अपने धर्म में शामिल नहीं होने देंगे और न ही धार्मिक भावनाओं को भड़काकर के वोट इकट्ठा करने वाली योजना के रखने वाले राजनीतिज्ञों को इसमें घुसने देंगे और न ही उनकी शक्ति अपने हाथों में लेने की लालसा करेंगे और न ही किसी भी प्रकार के राष्ट्र द्रोही कार्यों के लिये धर्म का उपयोग होने देंगे और न ही हम धर्म का उपयोग किसी गलत फायदा लेने के लिये करेंगे और न ही हिंसा का प्रयोग दूसरों के विरुद्ध करेंगे। क्योंकि हमारा विश्वास है कि किसी भी नाम पर युद्ध एक बुराई है।

८—हम लोग धर्म को आन्तरिक परिवर्तन, उच्च आध्यात्मिक अनुभव, स्वचेतना जागृति और पवित्रता प्राप्ति का साधन मानेंगे और इसीलिये इसे स्व-चेतना के लिये उपर्युक्त धर्म का चयन अथवा निर्माण का अधिकार समझेंगे और धर्म का अभ्यास अपने को चारित्रिक दृष्टि से उठाने के लिये करेंगे और दूसरों को भी धर्म के इसी लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा देंगे न कि उन्हें निरर्थक धार्मिक कृत्यों आदि को करने देंगे।

९—हम लोग किसी भी प्रकार की जाति, उपासना-पद्धति या मत के आधार पर विभाजन करने वाली प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं देंगे और न ही व्यक्तिगत स्वच्छता रखने वाले और वास्तविक अर्थों में सत्य के खोजी सफ़ाई आदि जैसे विकृष्ट कृत्यों में लगे "शूद्रों" अथवा दूसरे धर्मों के अनुयायियों का धार्मिक स्कूलों में प्रवेश, धार्मिक ग्रन्थों आदि को पढ़ने पर रोक लगायेंगे।

१०—हम लोग नारियों को समाज में समानता का स्तर प्रदान करेंगे और उन्हें समाज का प्रमुख व उपयोगी अंग समझेंगे। और हम नारियों के कर्तव्यों एवं स्तर के बारे में पुराने ग्रन्थों में वर्णित उपेक्षापूर्ण अपमानजनक बातों को निरर्थक या अनुचित मानेंगे और न ही हम इसे अपने धर्म समेत किसी भी अन्य धर्म या वास्तविक व शिष्ट दर्शन का विकास समझेंगे।

(शेष पृष्ठ २४ का)

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम होकिशे सीमा ने अपने शुभकामना सन्देश में आशा व्यक्त की है कि सर्वधर्म समभाव एवं एकता लाने वाला विश्व शान्ति सम्मेलन अवश्य ही शान्ति के प्रयासों को बढ़ायेगा।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार के जहाजरानी एवं परिवहन मंत्री भ्राता विजय भास्कर रेड्डी, उड़ीसा के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता जस्टिस डी० पाठक, कामन वैल्थ के सेक्रेटरी जनरल आदि प्रमुख महानुभावों ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए विश्व शान्ति के प्रयासों को पूरे विश्व में प्रसारित करके एक जनमत तैयार करने की शुभेच्छा प्रकट की है, ताकि उग्रवापद, हिंसा एवं युद्ध का वायुमण्डल समाप्त होकर विश्व में शान्ति एवं प्रेम पैदा हो सके।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

अहमदाबाद-नारायणपुरा—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र का १४वां वार्षिकोत्सव एक विशाल स्नेह मिलन के रूप में मनाया गया। जिसमें २००० राजयोगी भाई-बहिनों ने तथा २०० शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने १४ वर्ष की तपस्या का महत्व सुनाया। राजयोगा रीसर्च फाउन्डेशन के सेक्रेट्री जनरल ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने विश्व शान्ति महासम्मेलन के कार्यक्रमों से सर्व को अवगत कराया।

नैरोबी—प्राप्त समाचार के अनुसार नैरोबी शहर की जनता को "पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा" के जीवन चरित्र की जानकारी देने हेतु अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। हिन्दुस्तानी रेडियो सर्विस पर बहनों का प्रवचन प्रसारित हुआ। उसी दिन शाम को वाइस आफ केन्या टेलीवीजन पर "आज का समाचार" नामक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी प्रतिभा तथा शोभना बहन का १२ मिनट का इन्टरव्यू प्रसारित हुआ। जिसमें ब्रह्मा बाबा के जीवन की कई विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया तथा टेलीविजन पर ब्रह्मा बाबा का तपस्वी स्वरूप तीन बार दिखाया गया।

बम्बई—सायन सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार "फियट कार" फैक्टरी में "उद्योग में शान्ति" नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे ४ हजार मजदूर तथा फैक्टरी के मैनेजर व डायरेक्टर्स आदि ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त लोकमान्य तिलक अस्पताल में आयोजित विद्यार्थियों तथा डाक्टर्स के स्नेह मिलन का कार्यक्रम भी बहुत ही सफल रहा।

कलकत्ता—सेवाकेन्द्र की ओर से समाचार मिला है कि गंगा सागर के मेले पर त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन त्रिवेणी तीर्थ स्थान पर किया गया जिससे हजारों श्रद्धालू भक्तों ने पतित पावन परमात्मा का वास्तविक परिचय पाया तथा "पवित्र व योगी" बनने की प्रेरणा ली। आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों को प्रवचन करने का निमन्त्रण मिला जिसमें "सच्ची-गीता" पर बहनों का आधा घण्टा प्रवचन हुआ। बाबुघाट पर आयोजित प्रदर्शनी से भी हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

इलाहाबाद—प्राप्त समाचार के अनुसार त्रिवेणी के तट पर सर्व धर्माधिकारियों के मध्य एक विशाल चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्‌घाटन माघ मेला के प्रभारी अधिकारी भ्राता विश्व नाथ प्रसाद श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित करके किया।

गोंदिया—समाचार मिला है कि विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन एवं प्रोजेक्टर शो के आयोजन किये गये। जिससे आम जनता के अतिरिक्त अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी लाभ उठाया। शिव मन्दिर व नूतन स्कूल में आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे। स्मृति दिवस के उपलक्ष में वहाँ के प्रसिद्ध हाल "अग्रसेन भवन" में सार्वजनिक कार्यक्रम से भी हजारों लोगों ने लाभ प्राप्त किया।

जूनागढ़—प्राप्त समाचार के अनुसार जूनागढ़ के निकटवर्ती १५ ग्रामों तथा शहर के विभिन्न विद्यालयों में युवा-वर्ग से सम्बन्धित प्रदर्शनी व प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गये। जिससे हजारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

सूरत—समाचार मिला है कि जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व चैतन्य झांकियों के आयोजन किये गये जिससे हजारों ग्रामीण जनता ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त स्मृति दिवस के उपलक्ष में जजकालोनी में स्लाईड शो का आयोजन किया गया जिससे ३० न्यायमूर्तियों और उनके परिवार वालों ने लाभ लिया।

कोलार—सेवाकेन्द्र की ओर से मुलबागल तालुका में एक सप्ताह के लिए विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिससे २५ हजार आत्माओं ने लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविरों से भी ५०० लोगों ने लाभ लिया।

सिकन्द्राबाद—समाचार मिला है कि स्थानीय परेड ग्राउन्ड में सरकार द्वारा आयोजित औद्योगिक मेले के विशाल पण्डाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई थी जो एक मास चली। इससे लगभग ८० हजार आत्माओं ने

ज्ञान लाभ उठाया।

गाजियाबाद—कविनगर सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में डाक्टर, चीफ इन्जीनियर, बैंक के कैशियर तथा अन्य कई नई आत्माओं ने आध्यात्मिक लाभ लिया तथा संग्रहालय को भी भली-भांति देखा एवं समझा।

राँची—सेवाकेन्द्र की ओर से ६ दिन के लिए राँची के प्रसिद्ध स्थान फिरायालाल चौक के समीप दुर्गा मन्दिर में "विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। पन्द्रह हजार के लगभग संख्या में प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस प्रदर्शनी को देखा तथा लाभ लिया।

शिव सागर—समाचार मिला है कि ऐतिहासिक स्थल "कैरेंग घर" में दो दिन के लिए "चरित्र नव निर्माण" आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी इसको करीब २० हजार आत्माओं ने देखा आसाम के इन्स्पेक्टर जनरल और डी० आई० जी० ने रुचि से प्रदर्शनी देखी।

हापुड़—समाचार प्राप्त हुआ है, हापुड़ सेवा केन्द्र की ओर से ग्राम कैंली में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें ५०० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

ढेन्कानाल—सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु एक सप्ताह में ३ विभिन्न गांवों और दो हाई स्कूलों में आध्यात्मिक-प्रदर्शनी दिखाई गयी जिससे अनेक आत्माओं को लाभ हुआ।

पोरबन्दर—पास के गांवों में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के बाद राजयोग शिविर और सत्यनारायण की सच्ची कथा का आयोजन किया गया इसके अलावा युवा वर्ग के लिए स्कूलों में व्यसन मुक्ति विषय पर प्रवचन हुआ।

भंडारा—सेवा केन्द्र की ओर से नये साल के २ हजार कलेंडर छपवाये, यह कलेंडर अनेक गांवों में बांटे गये। २००० आत्माओं को आत्मा और परमात्मा का परिचय प्राप्त हुआ। इसके अलावा २०० भाइयों का योग शिविर रखा गया इससे अनेक आत्माओं को विशेष लाभ हुआ।

श्रीगंगानगर—स्थानीय शमशान भूमि में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने के लिए एक आध्यात्मिक संग्रहालय का निर्माण किया गया, जिससे हजारों आत्माओं को लाभ हो रहा है।

बड़ौदा—सिन्धु गीता-ज्ञान भवन में विशेष सिन्धु समाज की उन्नति हेतु शाम को एक आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। इसके अलावा करमडी गांव में प्रदर्शनी और राजयोग शिविर का कार्यक्रम हुआ। नारी संरक्षण गृह में प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम भी हुआ।

जामनगर—प्राप्त समाचार के अनुसार गणतन्त्र दिवस पर महानगर पालिका के द्वारा ब्र० कु० ई० वि० को झाँकी सजाने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। विद्यालय की ओर से "विश्व में एकता का आधार लव एण्ड ला का बैलन्स" नामक विषय पर बहुत सुन्दर झाँकी सजाई गई। इस झाँकी को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

दिल्ली शालीमारबाग—सेवा केन्द्र की ओर से नजदीक स्थान हैदरपुर गांव शालीमार गांव, बादली गांव में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। हर स्थान पर राजयोग शिविर का कार्यक्रम भी रखा गया। जिसमें अनेक ज्ञान प्यासी आत्माओं ने ज्ञानामृत पानकर ज्ञान प्यास बुझाई।

गाजियाबाद—कमला नेहरू नगर सेवा केन्द्र की ओर से राजनगर में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे वहाँ की अनेकानेक आत्माओं ने नई दुनिया के निर्माण कार्य की विधि को जाना तथा अपने जीवन को भी बदलने की प्रेरणा ली।

इन्दौर—क्षेत्रीय आफिस इन्दौर के पंचम सेवा पुष्प द्वारा क्षेत्रीय ईश्वरीय सेवा समाचार प्राप्त हुआ है। जिसमें लिखा है कि समस्त सेवा केन्द्रों द्वारा १८ जनवरी का दिन "स्मृति दिवस" व "विश्व शान्ति दिवस" के रूप में मनाया गया। माउण्ट आबू में हुए द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन के लिए सेवा केन्द्रों के भाई बहनों ने व्यक्तिगत सम्पर्क करके विशिष्ट व्यक्तियों को निमंत्रित किया।

इसके अलावा "स्मृति दिवस" पर अनेकों सेवा केन्द्रों से उत्साह वर्धक सेवा समाचार प्राप्त हुआ है जिसमें उदयपुर, मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरनगर, झज्जर, गोवा, बंगलोर, चन्द्रपुर, हनुमानगढ़ अहमदाबाद मणिनगर इत्यादि सेवा केन्द्र सम्मिलित हैं।

□□

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-३१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70